bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2082 युगाब्द 5127 कुल पृष्ठ–32, मई प्रथम अंक 2025, वर्ष–36 : अंक–19

वर्तमान
कमल ज्योति

वन्देमातरम्

₹20

WHY ENEMY PILOTS DON'T SLEEP WELL

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक

श्री भूपेन्द्र सिंह

सम्पादक

अरुण कान्त त्रिपाठी

प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक

राजकुमार

प्रकाशक

प्रो0 श्याम नन्दन सिंह

पृष्ठ संयोजक

ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग

लखनऊ – 1

फोन :– 0522–2200187

फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org

bjpkamaljyoti

Vartman Kamaljyoti

@bjpkamaljyoti

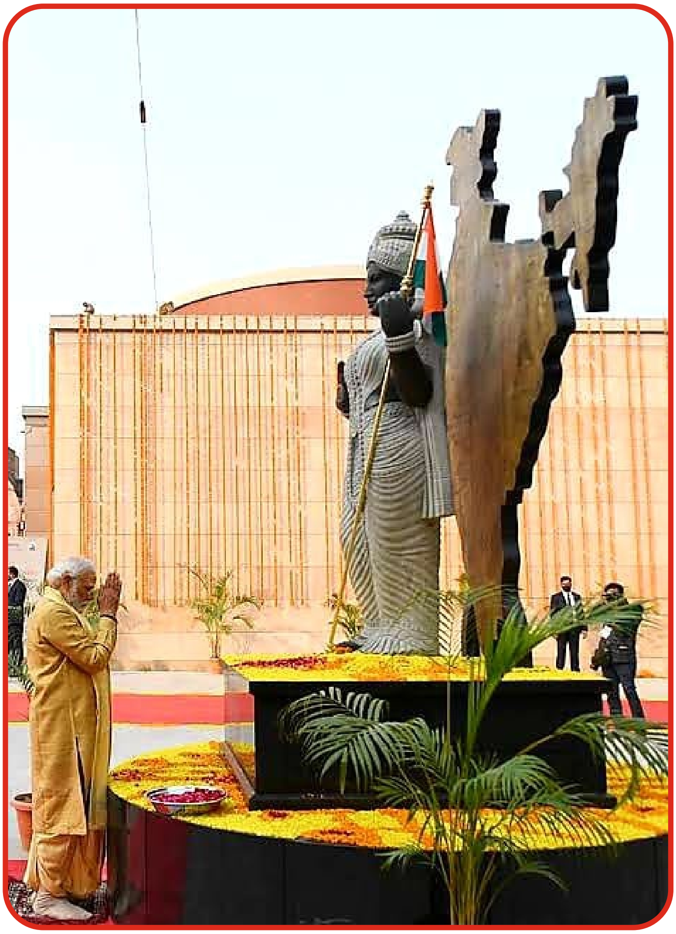

मन समर्पित तन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे अभी कुछ और भी दूँ।

सम्पादकीय

आतंकवाद के विरुद्ध अखण्ड प्रतिज्ञा

विश्व आतंकवाद की विभीषिका से जूझ रहा है। जिसका केन्द्र पाकिस्तान है। जिस प्रकार से भारत में आतंकवादी गतिविधियां बढ़ी हैं। उसका भारत ने इसबार मुहतोड़ जवाब दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर की अभूतपूर्व सफलता पर देशवासियों व सेना के सभी अंगों को बधाई दी। इस ऑपरेशन के तहत 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए, बुहवालपुर और मुरीदके जैसे 9 आतंकी ठिकाने तबाह किये गए और पाकिस्तान के हमलों की जवाबी कार्यवाही करते हुए पाकिस्तान के 11 एयर बेस को भरी नुकसान पहुँचाया गया। प्रधानमंत्री ने अमेरिका और ब्रिटेन को याद दिलाया कि उनके देशों में हुए बड़े आतंकी हमले वाले भी इन्हीं स्थानों पर प्रशिक्षित किये गए थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ा था इसीलिए भारत ने आतंकवादियों के हेडक्वांटस को ही उजाड़ दिया। आतंकवादियों और उनके आकाओं को ऐसी सजा मिली है जिसके बारे में उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था। पाकिस्तान ने हमारी सीमा पर वार किया तो भारत ने उसके सीने पर वार किया है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि अब ऑपरेशन सिन्दूर ही भारत की नीति है, भविष्य में होने वाले किसी भी आतंकी हमले को अब भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के सामान माना। प्रधानमंत्री ने कहा, अभी हमने सैन्य कार्यवाही केवल स्थगित की है। हमारी सेनाएं लगातार सतर्क व तैयार हैं तथा कहीं भी किसी भी समय हमला करने के लिए तैयार व तत्पर हैं।

प्रधानमंत्री ने वैश्विक समुदाय को भी स्पष्ट रूप से कह दिया है — अब अगर पाकिस्तान से कोई बात होगी तो वह केवल और केवल आतंकवाद और पीओके पर ही होगी और साथ ही अब भारत किसी भी प्रकार की परमाणु धमकी से नहीं डरने वाला है। भविष्य में भी यदि कोई आतंकी हमला होता है तो उसका इसी प्रकार मुहतोड़ जवाब दिया जायेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में पाकिस्तान के लिए लक्ष्मण रेखा खींच दी है। आपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में न्यू नार्मल तय कर दिया है। अब भारत का मत एकदम स्पष्ट है कि टेरर, ट्रेड और टाक एक साथ नहीं चलेंगे। पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकते। प्रधानमंत्री ने पाकिस्तानी सेना के अधिकारियों द्वारा आतंकियों के अंतिम संस्कार में भाग लेने का स्मरण कराते हुए खा कहा कि भारत आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग— अलग करके नहीं देखेगा।

पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा यदि पाकिस्तान को रहना है तो उसे आतंकी इंफ्रास्ट्रक्चर का सफाया करना ही पड़ेगा। पाकिस्तान की सरकार जिस तरह आतंकवाद को खाद पानी दे रही है वह एक दिन पाकिस्तान को ही समाप्त कर देगा। प्रधानमंत्री ने बताया कि आतंकी तीन दशक से पाकिस्तान में घूम रहे थे और पाकिस्तान ने आतंकियों पर कार्यवाही के बजाए भारत पर ही हमले करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान ने हमारे स्कूल—कालेज गुरुद्वारों और आम नागरिकों के घरों को निशाना बनाया लेकिन इससे वह खुद बेनकाब हो गया। दुनिया ने देखा कि किस प्रकार से पाकिस्तानी ड्रोन, मिसाइलें व विमान आदि तबाह हो रहे थे। हमारे डिफेंस सिस्टम ने उनके हर हमले को नाकाम कर दिया। आज हर आतंकी संगठन जान चुका है कि भारत की बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है। देश को संबोधित करते हुए भारत ने स्वदेशी आयुधों की भी जम कर प्रशंसा की।

ऑपरेशन सिन्दुर से भारत ने चेतावनी दिया कि आतंकवाद की लड़ाई अब रूकेगी नहीं ये भारत का अखण्ड संकल्प है।

'ऑपरेशन सिन्दूर' न्याय की अखण्ड प्रतिज्ञाः मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने युद्ध विराम के बाद राष्ट्र के नाम संदेश में कहा कि हम सभी ने बीते दिनों में देश का सामर्थ्य और उसका संयम दोनों देखा है। मैं सबसे पहले भारत की पराक्रमी सेनाओं को, सशस्त्र बलों को, हमारी खुफिया एजेंसियों को, हमारे वैज्ञानिकों को, हर भारतवासी की तरफ से सैल्यूट करता हूं। हमारे वीर सैनिकों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए असीम शौर्य का प्रदर्शन किया। मैं उनकी वीरता को, उनके साहस को, उनके पराक्रम को, आज समर्पित करता हूं– हमारे देश की हर माता को, देश की हर बहन को, और देश की हर बेटी को, ये पराक्रम समर्पित करता हूं।

निश्चित तौर पर यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन यह युग आतंकवाद का भी नहीं है: प्रधानमंत्री

22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों ने जो बर्बरता दिखाई थी, उसने देश और दुनिया को झकझोर दिया था। छुट्टियां मना रहे निर्दोष–मासूम नागरिकों को धर्म पूछकर, उनके परिवार के सामने, उनके बच्चों के सामने, बेरहमी से मार डालना, ये आतंक का बहुत विभत्स चेहरा था, क्रूरता थी। ये देश के सद्भाव को तोड़ने की घिनौनी कोशिश भी थी। मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से ये पीड़ा बहुत बड़ी थी। इस आतंकी हमले के बाद सारा राष्ट्र, हर नागरिक, हर समाज, हर वर्ग, हर राजनीतिक दल, एक स्वर में, आतंक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के लिए उठ खड़ा हुआ। हमने आतंकवादियों को मिट्टी में मिलाने के लिए भारत की सेनाओं को पूरी छूट दे दी। और आज हर आतंकी, आतंक का हर संगठन जान चुका है कि हमारी बहनों–बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है।

'ऑपरेशन सिंदूर' ये सिर्फ नाम नहीं है, ये देश के कोटि–कोटि लोगों की भावनाओं का प्रतिबिंब है। 'ऑपरेशन सिंदूर' न्याय की अखंड प्रतिज्ञा है। 6 मई की देर रात, 7 मई की सुबह, पूरी दुनिया ने इस प्रतिज्ञा को परिणाम में बदलते देखा है। भारत की सेनाओं ने पाकिस्तान में आतंक के ठिकानों पर, उनके ट्रेनिंग सेंटर्स पर सटीक प्रहार किया। आतंकियों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि भारत इतना बड़ा फैसला ले सकता है। लेकिन जब देश एकजुट होता है, छंजपवद थ्पतेज की भावना से भरा होता है, राष्ट्र सर्वोपरि होता है, तो फौलादी फैसले लिए जाते हैं, परिणाम लाकर दिखाए जाते हैं।

जब पाकिस्तान में आतंक के अड्डों पर भारत की मिसाइलों ने हमला बोला, भारत के ड्रोन्स ने हमला बोला, तो आतंकी संगठनों की इमारतें ही नहीं, बल्कि उनका हौसला भी थर्रा गया। बहावलपुर और मुरीदके जैसे आतंकी ठिकाने, एक प्रकार से ग्लोबल टैररिज्म की यूनिवर्सटीज रही हैं। दुनिया में कहीं पर भी जो बड़े आतंकी हमले हुए हैं, चाहे नाइन इलेवन हो, चाहे लंदन ट्यूब बॉम्बिंग्स हो, या फिर भारत में दशकों में जो बड़े–बड़े आतंकी हमले हुए हैं, उनके तार कहीं ना कहीं आतंक के इन्हीं ठिकानों से जुड़ते रहे हैं। आतंकियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ा था, इसलिए भारत ने आतंक के ये हेडक्वाट्र्स उजाड़ दिए। भारत के इन हमलों में 100 से अधिक खूंखार आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा गया है। आतंक के बहुत सारे आका, बीते ढाई–तीन दशकों से खुलेआम पाकिस्तान में घूम रहे थे, जो भारत के खिलाफ साजिशें करते थे, उन्हें भारत ने एक झटके में खत्म कर दिया।

भारत की इस कार्रवाई से पाकिस्तान घोर निराशा में घिर गया था, हताशा में घिर गया था, बौखला गया था, और इसी बौखलाहट में उसने एक और दुस्साहस किया। आतंक पर भारत की कार्रवाई का साथ देने के बजाय पाकिस्तान ने भारत पर ही हमला करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान ने हमारे स्कूलों–कॉलेजों को, गुरुद्वारों को, मंदिरों को, सामान्य नागरिकों के घरों को निशाना बनाया, पाकिस्तान ने हमारे सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, लेकिन इसमें भी पाकिस्तान खुद बेनकाब हो गया।

दुनिया ने देखा कि कैसे पाकिस्तान के ड्रोन्स और पाकिस्तान की मिसाइलें, भारत के सामने तिनके की तरह बिखर गईं। भारत के सशक्त एयर डिफेंस सिस्टम ने, उन्हें आसमान में ही नष्ट कर दिया। पाकिस्तान की तैयारी सीमा पर वार की थी, लेकिन भारत ने पाकिस्तान के सीने पर वार कर दिया। भारत के ड्रोन्स, भारत की मिसाइलों ने सटीकता के साथ हमला किया। पाकिस्तानी वायुसेना के उन एयरबेस को नुकसान पहुंचाया, जिस पर पाकिस्तान को बहुत घमंड था। भारत ने पहले तीन दिनों में ही पाकिस्तान को इतना तबाह कर दिया, जिसका उसे अंदाजा भी नहीं था।

इसलिए, भारत की आक्रामक कार्रवाई के बाद, पाकिस्तान बचने के रास्ते खोजने लगा। पाकिस्तान, दुनिया भर में तनाव कम करने की गुहार लगा रहा था। और बुरी तरह पिटने के बाद इसी मजबूरी में 10 मई की दोपहर को पाकिस्तानी सेना ने हमारे क्ळडव को संपर्क किया। तब तक हम

आज, हर आतंकी, आतंक का हर संगठन जान चुका है कि हमारी बहनों-बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है: प्रधानमंत्री

टेरर और टॉक, एक साथ नहीं हो सकते, टेरर और ट्रेड, एक साथ नहीं चल सकते, पानी और ख़ून भी एक साथ नहीं बह सकता: प्रधानमंत्री

आतंकवाद के इंफ्रास्ट्रक्चर को बड़े पैमाने पर तबाह कर चुके थे, आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया गया था, पाकिस्तान के सीने में बसाए गए आतंक के अड्डों को हमने खंडहर बना दिया था, इसलिए, जब पाकिस्तान की तरफ से गुहार लगाई गई, पाकिस्तान की तरफ से जब ये कहा गया, कि उसकी ओर से आगे कोई आतंकी गतिविधि और सैन्य दुस्साहस नहीं दिखाया जाएगा। तो भारत ने भी उस पर विचार किया। और मैं फिर दोहरा रहा हूं, हमने पाकिस्तान के आतंकी और सैन्य ठिकानों पर अपनी जवाबी कार्रवाई को अभी सिर्फ स्थगित किया है। आने वाले दिनों में, हम पाकिस्तान के हर कदम को इस कसौटी पर मापेंगे, कि वो क्या रवैया अपनाता है।

भारत की तीनों सेनाएं, हमारी एयरफोर्स, हमारी आर्मी, और हमारी नेवी, हमारी बॉर्डर सेक्योरिटी फोर्स– ठैथ, भारत के अर्धसैनिक बल, लगातार अलर्ट पर हैं। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के बाद, अब ऑपरेशन सिंदूर आतंक के खिलाफ भारत की नीति है। ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में एक नई लकीर खींच दी है, एक नया पैमाना, न्यू नॉर्मल तय कर दिया है।

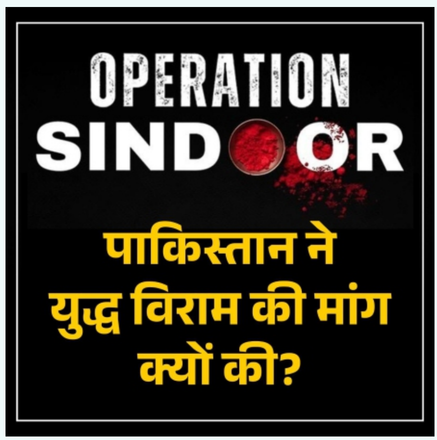

पहला– भारत पर आतंकी हमला हुआ तो मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर जवाब देकर रहेंगे। हर उस जगह जाकर कठोर कार्यवाही करेंगे, जहां से आतंक की जड़ें निकलती हैं। **दूसरा–** कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा। न्यूक्लियर ब्लैकमेल की आड़ में पनप रहे आतंकी ठिकानों पर भारत सटीक और निर्णायक प्रहार करेगा।

तीसरा– हम आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग–अलग नहीं देखेंगे। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, दुनिया ने, पाकिस्तान का वो घिनौना सच फिर देखा है, जब मारे गए आतंकियों को विदाई देने, पाकिस्तानी सेना के बड़े–बड़े अफसर उमड़ पड़े। स्टेट स्पॉन्सरड टेरेरिज्म का ये बहुत बड़ा सबूत है। हम भारत और अपने नागरिकों को किसी भी खतरे से बचाने के लिए लगातार निर्णायक कदम उठाते रहेंगे।

युद्ध के मैदान पर हमने हर बार पाकिस्तान को धूल चटाई है। और इस बार ऑपरेशन सिंदूर ने नया आयाम जोड़ा है। हमने रेगिस्तानों और पहाड़ों में अपनी क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया, और साथ ही, न्यू एज वॉरफेयर में भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। इस ऑपरेशन के दौरान, हमारे मेड इन इंडिया हथियारों की प्रमाणिकता सिद्ध हुई। आज दुनिया देख रही है, 21वीं सदी के वॉरफेयर में मेड इन इंडिया डिफेंस इक्विपमेंट्स, इसका समय आ चुका है। हर प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ हम सभी का एकजुट रहना, हमारी एकता, हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। निश्चित तौर पर ये युग युद्ध का नहीं है, लेकिन ये युग आतंकवाद का भी नहीं है। टैररिज्म के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, ये एक बेहतर दुनिया की गारंटी है।

पाकिस्तानी फौज, पाकिस्तान की सरकार, जिस तरह आतंकवाद को खाद–पानी दे रहे है, वो एक दिन पाकिस्तान को ही समाप्त कर देगा। पाकिस्तान को अगर बचना है तो उसे अपने टैरर इंफ्रास्ट्रक्चर का सफाया करना ही होगा। इसके अलावा शांति का कोई रास्ता नहीं है। भारत का मत एकदम स्पष्ट है, टैरर और टॉक, एक साथ नहीं हो सकते, टैरर और ट्रेड, एक साथ नहीं चल सकते और पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकता। मैं आज विश्व समुदाय को भी कहूंगा, हमारी घोषित नीति रही है, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो टेरेरिज्म पर ही होगी, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर, च्वज्ञ उस पर ही होगी।

प्रिय देशवासियों,

आज बुद्ध पूर्णिमा है। भगवान बुद्ध ने हमें शांति का रास्ता दिखाया है। शांति का मार्ग भी शक्ति से होकर जाता है। मानवता, शांति और समृद्धि की तरफ बढ़े, हर भारतीय शांति से जी सके, विकसित भारत के सपने को पूरा कर सके, इसके लिए भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है, और आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति का इस्तेमाल भी जरूरी है। और पिछले कुछ दिनों में, भारत ने यही किया है। मैं एक बार फिर भारत की सेना और सशस्त्र बलों को सैल्यूट करता हूं। हम भारतवासी के हौसले, हर भारतवासी की एकजुटता का शपथ, संकल्प, मैं उसे नमन करता हूं।

देश सेना के शौर्य पराक्रम को सैल्यूट करता है: योगी

ऑपरेशन सिंदूर में मिली विजय के बाद भाजपा द्वारा देशभर में तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है। लखनऊ में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाली गयी है। योगी ने इस अवसर पर कहा कि देश की सेना के शौर्य और पराक्रम का लोहा दुनिया ने माना है।

ऑपरेशन सिंदूर ने भारत को दुनियाभर में ख्याति दिलाई। इस अभियान के तहत पाकिस्तान द्वारा स्पॉन्सर्ड आतंकवाद पर भारतीय सेना ने प्रहार किया। इस हमले में 100 से अधिक आतंकवादियों की मौत हो गई। दुर्भाग्य की बात ये थी कि पाकिस्तान की सेना ने आतंकवाद के ऊपर किए गए हमले को अपने उपर हमला माना और भारत पर कई मिसाइल हमले किए और

ड्रोन हमले किए। भारतीय सेना ने इन हमलों का जवाब देते हुए सारे मिसाइलों और ड्रोन्स को हवा में ही मार गिराया। जब भारतीय सेना ने कार्रवाई शुरू की और एक के बाद एक कई एयरफील्ड्स और रडार सिस्टम्स को तबाह कर दिया तब पाकिस्तान घुटने के बल रेंगने लगा और उसने भारत के डीजीएमओ को सीजफायर का प्रस्ताव दिया। इस प्रस्ताव पर फिलहाल सहमति बनी है लेकिन सेना ने आपरेशन सिन्दूर जारी रखने की घोषणा किया है।

यह तिरंगा यात्रा सीएम आवास, पांच कालीदास मार्ग से शुरू होकर 1090 चौराहे तक गयी। यात्रा में भारत माता की जय, वन्दे मातरम् के नारे गूँजते रहे। सीएम योगी

आदित्यनाथ ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, 'पूरा देश भारत की सेना के शौर्य और पराक्रम को सैल्यूट करते हुए अपने बहादुर जवानों का अभिनंदन करने के लिए उतावला दिखाई दे रहा है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए हम सब प्रदेशवासियों की ओर से पीएम नरेंद्र मोदी का दिल से अभिनंदन करते हैं। पहलगाम में पर्यटकों की इस प्रकार की विभत्स और बर्बर घटना को पाकिस्तान परस्त आतंकवादियों ने अंजाम दिया था। पूरा देश और पूरी दुनिया ने उसकी निंदा की। आतंकवाद का प्रोडक्ट पाकिस्तान और उसके आका इस पूरी घटना में मौन बने रहे।' जिसका परिणाम भारत में घुस कर पाकिस्तान में आतंकी शिविरों को ध्वस्त किया।

सीएम योगी ने कहा, 'भारत की आन, बान, शान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हमारी सरकार ने जब ये सारे के सारे प्रमाण देने के बाद भी पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो अंततः ऑपरेशन सिंदूर का एक अभियान चलाया गया। पहले दिन ही 100 से अधिक आतंकवादियों को मार दिया गया। भारत के जवानों के पराक्रम और शौर्य का लोहा भी माना है। पाकिस्तान द्वारा की गई हिमाकत का जिस मजबूती के साथ भारत के जवानों ने चाहे वो हमारी थल सेना, वायु सेना या नेवी रही हो, सभी ने मजबूती के साथ मुकाबला किया है। जवानों के सम्मान में पूरे देश के अंदर भारतीय जनता पार्टी के द्वारा तिरंगा यात्रा प्रारंभ की गई है।'

तिरंगा यात्रा की शुरुआत दिल्ली समेत देश भर में की गई। दिल्ली के कर्तव्य पथ पर हजारों लोग हाथों में तिरंगा लिए जमा हुए। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, दिल्ली सरकार के सारे मंत्री, विधायकों के अलावा भाजपा के कई सीनियर नेता इस यात्रा में शामिल हुए। तिरंगा यात्रा में बुजुर्ग, महिलाओं, एनसीसी कैडेट्स और छोटे बच्चों ने भी हिस्सा लिया। वहीं हरियाणा के पंचकूला में भी पूरे जोश के साथ तिरंगा यात्रा निकाली गई। सीएम नायब सिंह सैनी ने तिरंगा यात्रा को लीड किया। अहमदाबाद की सड़कों पर भी देशभक्ति की गूंज सुनाई दी और सीएम भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। उत्तराखण्ड, उड़िसा समेत पूरे देश में तिरंगा यात्रा निकल रही है। लखनऊ यात्रा में प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह, महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह समेत शहर के गणमान्य नागरिक, विधायक मंत्रीगणों ने भाग लिया। ये यात्रा भारत माता की आराधना है।

ऑपरेशन सिन्दूर आतंकवाद से जंग

डॉ. शंकर सुवन सिंह

भारत ने ऑपरेशन सिन्दूर के तहत आतंक के गढ़ में आतंक को मार गिराया है। ऑपरेशन सिंदूर से कई आतकवादियों का सफाया हुआ है। पाक ने हिन्दुस्तानियों का सुहाग बिगाड़ा तो भारत ने आतंक का संसार ही उखाड़ दिया है। पाकिस्तान, हिन्दुस्तानियों से भविष्य में भय खाएगा और कोई भी घटना को अंजाम देने से पहले अपनी मौत को दावत देगा। पकिस्तान आतंकिस्तान है। पकिस्तान की सेना और आतंकवादी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों इस युद्ध में सन्देश जाता है कि पाकिस्तान की पूरी सेना ही आतंकवादी की भूमिका में है। विश्व में स्थायी भविष्य की शान्ति के लिए पाकिस्तान को नेस्तानाबूत ही करना पड़ेगा। ऑपरेशन सिन्दूर कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा 22 अप्रैल 2025 को मारे गए 26 भारतीयों का बदला है। हिन्दुस्तान ने ऑपरेशन सिंदूर से विश्व को आतंक के खिलाफ चेतावनी दे दी है। ऑपरेशन सिंदूर के द्वारा पाकिस्तान की लगभग सभी एयरबेस ध्वस्त हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान आतंक की कमर तोड़ रहा है न की नागरिकों की। भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों को तबाह

बराबर की सहभागिता निभा रहे हैं। पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी वहां की सेना का ही एक हिस्सा है जिसे आई एस आई आदि संगठन के नाम से जाना जाता है। पाकिस्तान का नाम आतंकिस्तान होना चाहिए। अब समय आ गया है की पूरे पकिस्तान को ध्वस्त कर विश्व में अमन और चैन स्थापित किया जाए। ऑपरेशन सिंदूर में कई आतंकवादी संगठन जैसे जैश, लश्कर, के आतंकवादियों को मार गिराया गया है। इन सभी मारे गए आतंकवादियों को पकिस्तान की सेना ने गॉर्ड ऑफ ऑनर दिया। इससे विश्व में कर दिया। आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिन्दूर ने पाकिस्तान के होश उड़ा दिए हैं। अब कंगाली की दहलीज पर पंहुच चुके पाकिस्तान को अपने रक्षा बजट को 18 फीसदी तक बढ़ाना पड़ा है। पहले से महंगाई की मार झेल रहे पाकिस्तान को भविष्य में बर्बादी का मंजर देखना पड़ेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक कोई बड़ी बात नहीं कि हम जल्द ही पाकिस्तान को टूटते हुए भी देखें। आतंक के आकाओं को समझ लेना चाहिए की अब उनका स्थान पृथ्वी पर न होकर जह्नुम है जहां उनको उनके अनुसार हूर की परियां

मिलेंगी। हिन्दुस्तान की सशक्त महिलाएं विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी ने ऑपरेशन सिंदूर को सफल बनाकर नारीशक्ति की मिसाल को कायम किया है। इनके जज्बे को मेरा सलाम है। आज कुंठित देश आतंकवाद का सहारा लेता है या गलत नीतियों और सिद्धातों का सहारा लेता है। इसलिए जो देश कभी एक हुआ करते थे वो आज एक दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं। आतंकवाद एक विशेष धर्म में ही क्यों पनपा? ये बड़ा प्रश्न है। लोग कहते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, पर मेरा मानना है की आतंकवाद है और आतंक के आकाओं का धर्म मुस्लिम है। इन्हे मुस्लिम आतंकी कहने में कोई हर्ज़ नहीं है। ये सारेआतंकी पाकिस्तान जैसे मुस्लिम देश में ही क्यों पल रहे हैं? ये आतंकी नमाज भी पढ़ते हैं, मस्जिद भी जाते हैं और मुस्लिम देश में शरण भी लेते हैं तो ये मुस्लिम ही तो हुए। इन आतंक के आकाओं की कमर तोड़ दी जाएगी और भविष्य में ये अपनी जड़ को कमजोर होते देखेंगे। विश्व के सभी मुस्लिम समुदाय के लोगों को आतंकियों को सबक सिखाना पड़ेगा वरना ये आतंकी मुस्लिम, पूरे मुस्लिम समुदाय को बर्बाद कर देंगे। ये आतंकी, मुस्लिम समुदाय के लिए दीमक का काम कर रहे हैं। यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला मुस्लिम देश पाकिस्तान खुद एक दिन अपनी बर्बादी की कहानी लिखेगा।

वहीं दूसरी तरफ देखा जाए तो एक अपना हिन्दुस्तान का मुसलमान है जो राष्ट्र प्रथम और राष्ट्र सर्वोपरि की अभिधारणा पर चलता है। ये भारत के मुस्लिम क्या मुस्लिम नहीं हैं जिनमे प्रेम और सद्भाव कूट कूट के भरा है। कहने का तात्पर्य यह है की कोई देश चाहे तो वो अपने नागरिको को आतंकवादी बना दे या अपने नागरिकों को देवतुल्य बना दे। सारा खेल नागरिकता और वहां की संस्कृति का है। जिस देश की संस्कृति और सभ्यता जैसी होती है वैसे ही वहां का नागरिक भी बन जाता है। कहने का तात्पर्य धर्म से बढ़कर पहले राष्ट्र है। स्वतः के साथ प्रतिस्पर्धा स्व को निर्मित करती है, साथ ही साथ समाज और राष्ट्र को मजबूत करती है। व्यक्ति,समाज और राष्ट्र सभी की प्रतिस्पर्धा स्वयं से होनी चाहिए। प्रकृति, दूसरों से प्रतिस्पर्धा की अनुमति नहीं देती है। प्रकृति हमेशा स्व से जुड़ने की ओर प्रेरित करती है। स्व से जुड़ना ही असली प्रतिस्पर्धा है। एक सफल राष्ट्र की प्रतिस्पर्धा स्वतः से होती है। जैसे बेरोजगारी, महंगाई, खाद्यान, मेडिकल, शिक्षा आदि को लेकर प्रतिस्पर्धा। कहने का तात्पर्य एक सफल राष्ट्र की प्रतिस्पर्धा स्वयं के दृष्टिकोण से होती है जो भारत में है। युद्ध आतंक के सफाए के लिए जरुरी है। आतंक का सफाया विश्व में शांति ले कर आएगा। शांति, विकास का कारण बनती है। आतंक के खिलाफ युद्ध वैश्विक शांति का कारक है। कहने का तात्पर्य यह है कि पड़ोसी देश पाकिस्तान से जब आतंक का सफया होगा तभी शांति कायम होगी। और वही शांति पड़ोसी मुल्क से मित्रता का कारण बनेगी। आतंक के खिलाफ युद्ध आस्तिकता को प्रकट करती है। आतंकवाद नास्तिकता को प्रकट करती है। आस्तिकता स्वर्ग को प्रकट करती है। नास्तिकता नरक को प्रकट करती है। आस्तिकता स्वर्ग के द्वार को खोलती है। नास्तिकता नरक के द्वार को खोलता है। अतएव आतंकवाद किसी नरक से कम नहीं है। अतएव हम कह सकते हैं कि आतंकवाद, नास्तिकता का प्रतीक है। पाकिस्तान आतंकवाद की आड़ में अपनी विजय पताका लहराना चाहता है। जिस किसी देश ने आतंकवाद को अपने देश में दखलंदाजी करने की सह दी वह देश बर्बाद हो गया। भारत जैसा देश जो आतंकवाद के खिलाफ है वो महान है। आतंकवाद विश्व के भविष्य के लिए चेतावनी है। विश्व के सभी देशों को आतंकवाद के खिलाफ एक होकर लड़ने की जरुरत है। सभी देशों को मिलकर विश्व के स्थाई भविष्य के लिए काम करना चाहिए। भारत पाकिस्तान का यह युद्ध आतंकवाद पर कड़ा प्रहार साबित होगा। अतएव हम कह सकते हैं कि ऑपरेशन सिन्दूर से आतंकवाद की कमर टूटी है और आतंकियों का सफाया हुआ है।

'जातीय जनगणना' राजनीति में नया इतिहास

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा जाति जनगणना कराये जाने के ऐतिहासिक फैसले पर लखनऊ के सहकारिता भवन में संगोष्ठी एवं आभार सभा सम्पन्न हुई। जिसमें मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद एवं भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. के लक्ष्मण रहे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री व भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेंद्र कश्यप ने की। कार्यक्रम को पूर्व सांसद व भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संगम लाल गुप्ता ने भी संबोधित किया। भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश महामंत्री, विधान परिषद सदस्य श्री रामचंद्र प्रधान द्वारा संचालन किया गया।

श्री लक्ष्मण ने कहा कि देश इस बात को जानता है कि अन्तिम रूप से जातीय जनगणना आजादी के पूर्व वर्ष 1931 में हुई थी। 94 वर्ष का लम्बा अन्तराल ऐसा गुजरा जिसमें अधिकांश समय में कांग्रेस पार्टी या गैर भाजपा दलों की सरकारे देश में रही है। लेकिन अफसोस कि गैर भाजपाई किसी भी सरकार ने जातीय जनगणना कराने का कभी साहस नहीं जुटाया और आज उनकी पार्टी के नेता राहुल गांधी, अखिलेश यादव तथा तेजस्वी यादव जैसे अनेको पिछड़ा वर्ग विरोधी सोच रखने वाले, आज मोदी जी के जातीय जनगणना कराने के फैसले का श्रेय लेने की होड़ में खड़े हो गये हैं। अच्छा होता कांग्रेस, समाजवादी पार्टी,

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. के. लक्ष्मण ने संगोष्ठी को कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जातीय जनगणना कराये जाने का फैसला लेकर भारत की राजनीति में एक नया इतिहास लिखने का काम किया है। जातीय जनगणना कराने से विशेष कर भारत के अन्य पिछड़े एवं अति पिछड़े वर्ग के लोगों को अपनी संख्या की पहचान होगी और संख्या के अनुपात में संवैधानिक अधिकारों को पाने का अवसर मिलेगा। प्रधानमंत्री जी के इस ऐतिहासिक फैसले का ओबीसी मोर्चा एवं ओबीसी समाज हृदय से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करता है।

राष्ट्रीय जनता दल जैसे सभी गैर भाजपाई दलों के नेता भारत के पिछड़े वर्ग के लोगों से माफी मांगते।

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि वर्ष 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने लोकसभा में आश्वासन दिया था कि जाति जनगणना पर कैबिनेट में विचार किया जाएगा। इसके पश्चात एक समिति का भी गठन किया गया जिसमें अधिकांश राजनैतिक दलों ने जातिगत आधार पर जनगणना की संस्तुति की। लेकिन तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री पी चिदम्बरम ने 2011 की जनगणना जातिगत आधार पर कराने का विरोध किया और

कहा कि जातियों की गिनती जनगणना में नही बल्कि अलग से कराई जाएगी। इसके बावजूद कांग्रेस की सरकार ने जाति जनगणना की जगह एक सर्वे करवाया जिस पर 4893.60 करोड़ रूपए खर्च किए गए। लेकिन जातिगत आकड़े प्रकाशित नही हुए क्योंकि इस सर्वे में 8.19 करोड़ गलतियां पाई गई। उन्होंने कहा कि कांग्रेस–सपा सहित इंडी गठबंधन के तमाम घटक दल जाति आधारित जनगणना के सदैव विरोध में रहे।

भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री श्री नरेंद्र कश्यप ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की जातीय जनगणना के फैसले से आज पिछड़े वर्ग के लोगों में जश्न का माहौल है, लोग खुशियां मना रहे हैं, लड्डू बांट रहे हैं तथा ढोल–बैण्ड बाजे बजाकर प्रधानमंत्री जी के फैसले का स्वागत कर रहे हैं। क्योंकि जातीय जनगणना होने से सामाजिक न्याय एवं संवैधानिक अधिकारों को पाने के नये अवसर मिलने वाले हैं। ओबीसी समाज के लोगों को शिक्षा, अर्थ व्यवस्था एवं राजनीति में भी आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। मोदी जी ने साबित किया है कि वह जो कहते हैं, करके भी दिखाते हैं। भाजपा की विचारधारा अन्योदय से सर्वोदय तक जाने की है। जो जातीय जनगणना के फैसले से सही प्रतीत हो रही है।

श्री नरेन्द्र कश्यप ने कहा कि देश में गांधी परिवार से 03 प्रधानमंत्री बने हैं जिनमें पं0 जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी के अलावा राजीव गांधी। क्या कभी गांधी परिवार ने ओबीसी समाज के लोगों के इस दर्द को समझा? गांधी परिवार तो हमेशा आरक्षण का विरोधी रहा है, ओबीसी समाज का विरोधी रहा है, दलितो का विरोधी रहा है। गांधी परिवार की यह आरक्षण विरोधी नियत देश के सामने उस समय उजागर हो गयी थी जब 1955 के काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट को पं0 जवाहरलाल नेहरू ने लागू नहीं होने दिया और 1980 में बी.पी. मण्डल आयोग की रिपोर्ट का तो खुलकर संसद एवं सड़क पर गांधी परिवार ने विरोध किया और सच तो यह भी है कि यदि 1990 में भाजपा के समर्थन से बी.पी. सिंह की सरकार नहीं बनी होती तो देश को कभी ओबीसी के लोगों को 27 प्रतिशत आरक्षण भी नहीं मिला होता। कांग्रेस पार्टी की नियत यदि ओबीसी समाज के लिए ठीक होती तो इस समाज को आरक्षण का लाभ आजादी के तुरन्त बाद ही मिल जाता। आज ओबीसी समाज भारत की मुख्यधारा से जुड़ा होता तथा बराबरी का स्थान व सम्मान पा चुका होता।

श्री नरेन्द्र कश्यप ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सही मायनों में देश की 140 करोड़ जनता को अपना मानते है, जिन्होंने ''सबका साथ सबका विकास'' की अवधारणा पर सबको आगे बढ़ाने का काम किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ओबीसी समाज के दर्द व मर्म को समझा। आज भारत के अन्दर ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा मिला। ओबीसी के चेयरमैन को कैबनेट मंत्री का दर्जा मिलना, नीट परीक्षा में 27 प्रतिशत आरक्षण मिलना, केन्द्रीय एवं सैनिक विद्यालयों में 27 प्रतिशत रिजर्वेशन मिलना, क्रीमिलेयर आय सीमा को 8 लाख तक बढ़ाना तथा केन्द्रीय कैबनेट में 27 प्रतिशत पिछड़े सांसदों को मंत्री बनाना जैसे महत्वपूर्ण निर्णय हुए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश में जातिगत जनगणना कराए जाने को लेकर घोषणा की थी, जिसको लेकर अब भारतीय जनता पार्टी एक अभियान के रूप में शुरू कर चुकी है। श्री कश्यप ने कहा कि ओबीसी मोर्चा, उ0प्र0 जहाँ एक तरफ जातीय जनगणना का फैसला लेने वाले देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त करेगा वहीं कांग्रेस, सपा एवं गैर भाजपाई दलों जिनकी सोच, मानसिकता एवं एजेण्डा पिछड़ा विरोधी रहा है, उसका पर्दाफाश भी करेगा।

"सबका साथ सबका विकास" की अवधारणा पर सबको आगे बढ़ाने का काम किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ओबीसी समाज के दर्द व मर्म को समझा।

भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संगम लाल गुप्ता ने जातिगत जनगणना कराने के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि ओबीसी मोर्चा और भारतीय जनता पार्टी देश भर में स्वागत समारोह जनसभा तथा अन्य समारोह व रैली करेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जातिगत जनगणना कराने के फैसले के बाद कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेताओं को बेचैन कर दिया है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने ऐसा फैसला लिया है कि विपक्ष देखता रह गया और उसके पास इसका स्वागत करने और समर्थन देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है।

ओबीसी मोर्चा के प्रदेश महामंत्री एमएलसी रामचंद्र प्रधान ने कहा है कि जातिगत जनगणना होने से भारत और उत्तर प्रदेश के अलावा देश के कोने कोने में रहने वाले पिछड़ों को बहुत लाभ मिलने वाला है। उन्होंने कहा कि जब प्रत्येक राज्य सरकार के पास पिछड़ों का स्पष्ट आंकड़ा होगा, तो उनके लिए तमाम तरीके की नौकरी, रोजगार, शिक्षा, व्यवसाय और निजी क्षेत्र में भी विकल्प खोजे जाएंगे। साथ ही उनके उत्थान, विकास और शिक्षा पर भी जोर दिया जाएगा। कार्यक्रम में भाजपा विधायक रामरतन कुशवाहा, लखनऊ भाजपा जिलाध्यक्ष विजय मौर्या, प्रदेश महामंत्री ओबीसी मोर्चा संजय भाई पटेल, ऋषि चौरसिया, नीरज गुप्ता, विजय गुप्ता सहित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अद्वैतवादी अद्वितीय है पू. शंकराचार्य

हृदय नारायण दीक्षित

शंकराचार्य छठी सदी के मध्य जन्मे थे। अतिविशिष्ट महानुभावों के जन्म स्थल और जन्म तिथि पर अक्सर विवाद रहता है। आर. जी. भंडारकर के अनुसार शंकराचार्य का जन्म सन 680 में हुआ था। प्रख्यात विद्वान मैक्समूलर के अनुसार शंकर का जन्म 788 ईस्वी में हुआ था। यही तिथि मैकडनल को भी मान्य है। शंकराचार्य का जीवन अल्पकाल का था। इस अल्पकाल में उन्होंने दुनिया के सभी विद्वानों की तुलना में सभी विषयों पर बड़ा काम किया। ज्ञान और कर्म दोनों ही उनके जीवन में शीर्ष पर पहुंचे। डॉक्टर राधाकृष्णन ने 'भारतीय दर्शन' (हिंदी अनुवाद पृष्ठ 384) में लिखा है कि, "अपनी बाल्यावस्था में ही 8 वर्ष की आयु में उन्होंने गहन अभिलाषा प्रसन्नता के साथ सब वेदों को कंठस्थ कर लिया था। वे प्रकट रूप में वैदिक ज्ञान तथा स्वतंत्र प्रज्ञा से युक्त तेजस्वी व्यक्ति थे। वे सन्यासी हो गए थे। किन्तु वीतरागी परिव्राजक नहीं थे।" वे गृहस्थ जीवन त्याग कर राग द्वेष से मुक्त होकर एकांतवास करने वाले सामान्य योगी नहीं थे। मजेदार बात है कि दर्शन में संसार को मिथ्या सिद्ध करने वाले आचार्य शंकर संसार और समाज को सत्य और आनंद से भरने के लिए पूरे भारत का भ्रमण किए थे। उन्होंने जगह–जगह प्रवचन किए। तर्क हुए। सत्य का विशुद्ध प्रकाश था उनके अन्तस्तल में। एक आचार्य के रूप में उन्होंने स्थान स्थान पर भ्रमण किया। विभिन्न मतों के नेताओं के साथ संवाद और शास्त्रार्थ हुए। परंपरागत वर्णनों के अनुसार, वे अपनी विजय यात्राओं में कुमारिल और मण्डन मिश्र के संपर्क में आए। आगे चलकर मण्डन मिश्र उनके शिष्य बने। अमरूक के मृत शरीर में शंकर के प्रवेश करने की कहानी यह प्रकट करती है कि शंकर योग सम्बंधी क्रियाओं में निपुण थे। उन्होंने चार मठों की स्थापना की। जिनमें मुख्य वह है जो मैसूर प्रांत में श्रृंगेरी में है। अन्य तीन मठ क्रमशः पूर्व में पुरी में, पश्चिम में द्वारका में और हिमालय प्रदेश में बद्रीनाथ में है। शारदा शक्तिपीठ की प्रतिष्ठा उन्होंने ही की थी। यह अब पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर में है।

समूचे विश्व में दो दिन पहले प्रख्यात दार्शनिक शंकराचार्य की जयंती के उत्सव आयोजित हुए हैं। शंकराचार्य ने भारत के अद्वैत दर्शन को लेकर तमाम अभियान चलाए थे। उन्होंने देश की सांस्कृतिक एकता के लिए लगातार अभियान चलाए। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम एकात्म ब्रह्म–दर्शन की धूम थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आदि शंकराचार्य की जयंती के अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए बताया कि तीन वर्ष पूर्व सितंबर में उन्हें आदि शंकराचार्य के पवित्र जन्मस्थान का दौरा करने का सौभाग्य मिला था। आदि शंकराचार्य की भव्य प्रतिमा उनके संसदीय क्षेत्र काशी में विश्वनाथ धाम परिसर में स्थापित की गई है। प्रतिमा आदि शंकराचार्य के विशाल आध्यात्मिक ज्ञान और शिक्षाओं के प्रति सम्मान है। उत्तराखंड के पवित्र केदारनाथ धाम में आदि शंकराचार्य की दिव्य प्रतिमा का

अनावरण करने का भी उल्लेख किया। प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया कि केरल से निकलकर आदि शंकराचार्य ने देश के विभिन्न भागों में मठों की स्थापना करके राष्ट्र की चेतना को जगाया। उन्होंने एकीकृत और आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध भारत की नींव रखी। शंकराचार्य विरल थे। अविश्वसनीय शिखर ऊँचाई से भी ऊंचे। पाताल की गहराई से भी गहरे।

उन्होंने अद्वैत दर्शन के सूक्ष्म सूत्रों का भाष्य किया। विज्ञान में थोड़ी सी चूक भी सारे परिणाम बदल देती है। दर्शन में एक शब्द के भिन्न प्रयोग से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। यह बात महाभाष्य में पतंजलि ने कही है। आचार्य ने ब्रह्म को सत्य और जगत् को मिथ्या कहा था। यहाँ ब्रह्म सम्पूर्णता है। मिथ्या का अर्थ झूठ नहीं है। अंग्रेजी का मिथ संस्कृत के मिथ्या का पड़ोसी हो सकता है। मिथ्या का अर्थ विनाशी है। ब्रह्म काल बंधन से परे है और अविनाशी है। जगत् काल गति के भीतर है, इसलिए भंगुर है। मत्र्य है। नाशवान है। शंकर के विरोधियों ने इसकी गलत व्याख्या की। उन्होंने ज्ञान के समकालीन मानदण्डों, विश्वास व प्राचीन सूत्रों का परंपराओं के साथ समन्वय किया।

धर्म वस्तुतः जीवन के अंधकारमय संकटों का सामना करने की प्रेरणा व अचार संहिता है। यह केवल उसी अवस्था में जीवित रह सकता है जब यह विचार का उत्तम परिणाम हो।

शंकराचार्य के समय की परिस्थितियां विचारणीय हैं। दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म का ह्रास हो रहा था। जैन मत शिखर पर था। वैदिक परंपरा का भी ह्रास हो रहा था। शैव मतावलंबी भक्त (उदियार) और वैष्णव मत वाले भक्त (आलवार) भक्ति मार्ग का प्रचार कर रहे थे। मंदिरों में पूजा, पाठ, पर्व, त्यौहार प्रचलित थे। कुमारिल और मण्डन मिश्र ने अपने बौद्धिक ज्ञान के बल पर ज्ञान और सन्यास के महत्व को कम किया था। दोनों ने गृहस्थ आश्रम की उपयोगिता पर अधिक बल दिया था। इसी वातावरण में शंकराचार्य की प्रतिभा का बिस्फोट हुआ था। वे सनातन धर्म के रक्षक और रूढ़ियों के विरोध में अभियान चला रहे थे। पूरे देश में वैदिक दर्शन की जगह पुराण ले रहे थे। शंकराचार्य ने पुराणों के प्रकाशमान स्वर्ग आकांक्षी युग के स्थान पर उपनिषदों के सत्य को फिर से लौटा लाने का अभियान चलाया। उन्होंने संपूर्ण भारत और युग धर्म को प्रवर्तित करने का काम किया। धर्म की शक्ति को बड़ा बताया।

डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि, "उन्होंने अपने युग को धार्मिक दिशा में मोड़ने के प्रयत्न करने में अपने को विवश पाया। इसकी सिद्धि उन्होंने एक ऐसे दर्शन व धर्म की व्यवस्था के द्वारा सम्पन्न की जो बौद्ध धर्म, मीमांसा तथा भक्ति धर्म की अपेक्षा जनता की आवश्यकताओं को कहीं अधिक सन्तोषप्रद सिद्ध हो सकती थी। आस्तिकवादी सत्य को भावावेश के कुहरे से आवृत्त किए हुए थे। रहस्यवादी अनुभव प्राप्त करनेवाली अपनी प्रतिभा से सम्पन्न वे लोग जीवन की क्रियात्मक समस्याओं के प्रति उदासीन थे। मीमांसकों द्वारा कर्म के ऊपर दिए गए बल से एक आत्मविहीन क्रियाकलाप का विकास हुआ।"

धर्म वस्तुतः जीवन के अंधकारमय संकटों का सामना करने की प्रेरणा व अचार संहिता है। यह केवल उसी अवस्था में जीवित रह सकता है जब यह विचार का उत्तम परिणाम हो। शंकर की सम्मति में, अद्वैत दर्शन ही एकमात्र परस्पर विरोधी सम्प्रदायों में निहित सत्य है। वही उसकी न्यायोचितता का प्रतिपादन कर सकता है। उन्होंने अपने सब ग्रन्थों की रचना इसी एक उद्देश्य को लेकर की थी। यही जीवात्मा को ब्रह्म के साथ अपने एकत्व को पहचानने में सहायक है। सिद्ध होने के लिए और यही संसार में मोक्ष प्राप्ति का उपाय है। सभी दुखों और बंधनों से छुटकारा ही मोक्ष है।

उन्होंने केरल के अपने जन्म स्थान दक्षिण से उत्तर की यात्रा की। उत्तर में हिमालय तक उन्हें पूजा व उपासना के अनेक रूप देखने को मिले। उन्होंने सभी उपासना पद्धतियों का अध्ययन किया। सबके सनातन तत्व को स्वीकार किया। उनके इस अभियान में संपूर्ण मानवता को उच्चस्तरीय मेधा संपन्न बनाने का ध्येय था। उन्होंने सनातन धर्म के सभी देवताओं की उपासना को उचित ठहराया। विष्णु, शिव, शक्ति (देवी) और सूर्य आदि प्रकाशमान देवताओं के लिए विशेष छंदों की रचना की। तत्कालीन धर्म आचार में नए प्राण डालने का काम किया। उन्होंने दक्षिण भारत में शक्ति पूजा की मूर्त रूप अभिव्यक्ति को उचित नहीं पाया। शरीर को विविध चिन्हों से दागने की प्रथा को अनुचित ठहराया।

महापुरुषों के जीवन में अंतर्विरोध होते हैं। आचार्य शंकर के जीवन में, श्रीराम के जीवन की तरह विरोधी भावों का समन्वय है। श्रीराम कोमल हैं, तो युद्ध में कठोर भी हैं। वे सामान्य आदमियों की तरह विचलित होते हैं और ऐश्वर्यवान देवता की तरह निर्लिप्त भी हैं। शंकराचार्य समाज सुधारक हैं। ज्ञान प्रचारक हैं। कवि हैं। परम विद्वान और ज्ञानी पंडित भी हैं। योगी हैं। शैव हैं। संत हैं और वैरागी भी हैं। तरुणाई में वे परम जिज्ञासु बौद्धिक हैं। वस्तुतः वे प्रशांत अद्वैतवादी हैं और ज्ञान को ही मुक्ति का उपाय बताते हैं, लेकिन भक्ति को त्याज्य नहीं बताते। अद्वैतवादी शंकर की प्रतिभा अद्वितीय है। डॉक्टर राधाकृष्णन ने सही कहा है कि, "वे हमारी जानकारी से ज्यादा महान हैं। सामाजिक क्षेत्र में उनके समान मेधावी बहुत कम हैं।"

जो कहा वो किया – आपरेशन सिंदूर

मृत्युंजय दीक्षित

अप्रैल 22, 2025 पहलगाम में 26–निहत्थे निर्दोष हिन्दुओं की धर्म पूछकर हत्या से पूरा देश आहत था। दु:ख और क्रोध दोनों चरम पर थे। गृहमंत्री अमित शाह समाचार मिलते ही घटनास्थल पर पहुँच गए। प्रधानमंत्री अपनी विदेश यात्रा संक्षिप्त कर स्वदेश लौटे। अगले ही दिन मधुबनी रैली में घोषणा की, इस बार ऐसा दंड मिलेगा जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी, इस संकल्प को उन्होंने अपने मन की बात कार्यक्रम में दोहराया। गृहमुंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री के संकल्प को बल देते हुए कहा, "हम एक–एक आतंकी को चुन–चुन कर मारेंगे" और अंत में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि ये मेरा उत्तरदायित्व है कि देशवासी जो कुछ चाहते हैं वह सब कुछ मोदी सरकार में होकर रहेगा। इन वक्तव्यों के पीछे सरकार और सेना के सभी संकल्पबद्ध राष्ट्रभक्त सामरिक और रणनीतिक तैयारियां कर रहे थे।

पहलगाम की आतंकी घटना के पश्चात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को सही समय, सही स्थान और सही लक्ष्य चुन कर सटीक वार करने की छूट दे दी थी। भारतीय सेना ने 6–7 मई 2025 की मध्यरात्रि को अपने पराक्रम का प्रदर्शन करके हर भारतीय का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया। आज हर भारतीय नागरिक अपनी सेना के साहस को प्रणाम कर रहा है और सेना के साथ खड़ा है। जैसे ही ऑपरेशन सिंदूर के सफलतापूर्वक लांच होने की सूचना आई रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा "भारत माता की जय" और उसके बाद भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में ऑपरेशन सिंदूर ट्रेंड करने लगा। भारत पाक सीमा तथा पीओके पर 9 आतंकी

ठिकानों के तबाह होते ही देश के अनेक हिस्सों में उत्सव का वातावरण बन गया।

लम्बे विचार विमर्श और तैयारियों, कूटनीतिक पक्ष को साधने के साथ सटीक रणनीति का उपयोग करते हुए "आपरेशन सिंदूर" के माध्यम से भारतीय सेना ने पक्के सबूतों के साथ पाकिस्तान और गुलाम जम्मू –कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमलाकर उन्हें तबाह कर

दिया। भारत ने पंजाब प्रांत के बहालवपुर जैश–ए –मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर के ठिकाने पर जोरदार मिसाइल अटैक किसा जिससे मसूद अजहर के परिवार के 14 सदस्यों के मारे जाने की खबर आ रही है। पाकिस्तानी सेना के चीन में बने एचक्यू–9 एयर डिफेंस सिस्टम को चकमा देते हुए भारतीय सेना ने 9 आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके भारत के सभी दुश्मनों को साफ संदेश दिया है कि अगर कोई उसे छेड़ेगा तो वह अब घर में घुसकर मारेगा। यह नया भारत है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार देश के दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब दे रही है जो भाषा वो समझते हैं। भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले फिलहाल किसी बिल में छुपे हैं और अपने देशवसियों को कुछ बता पाने की स्थिति में ही नहीं रह गये हैं। जिन आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोषों की हत्याएं करते समय उनकी पत्नियों या परिजनों से कहा था कि हम तुमको नहीं मारेंगे, जाओ मोदी को जाकर बता दो उनको प्रधानमंत्री मोदी ने बता दिया है कि वो सुन चुके हैं। उत्तर इतना तगड़ा और सधा हुआ दिया है कि आज पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठन, सेना व वहां की खुफिया एजेंसी आईएसआई हैरान हैं।

आपरेशन सिंदूर" को मोदी सरकार में अब तक हुई स्ट्राइक्स में सबसे अलग माना जा रहा है। "आपरेशन सिंदूर" प्रधानमंत्री मोदी के उत्कृष्ट नेतृत्व का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह आपरेशन बिना किसी दोष का अद्भुत प्रस्तुतीकरण रहा जिसमें आतंकी ठिकानों और आतंकवादियों को छोड़कर किसी भी निर्दोष नागरिक या पाक सेना के जवान को नुकसान नहीं पहुंचा और भारतीय सेना अपनी कार्यवाही को पूरा करके सकुशल घर वापस आ गई।

अब पाकिस्तान को यह समझ में नहीं आ रहा है कि वह पूरे घटनाक्रम पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करे हालांकि पाक प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ की लंबी आपात बैठक के बाद पाक का बयान आया है कि उसे भारत पर जवाबी कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त है। पहलगाम घटना के बाद से पाकिस्तानी सेना एलओसी पर लगातार फायरिंग कर रही है जिसका भारतीय सेना भी पूरी बहादुरी के साथ लगातार जवाब दे रही है। भारत पाकिस्तान को लगातार चेतावनी दे रहा है कि एलओसी पर फायरिंग बंद करो नहीं तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

आतंकी ठिकानों पर हमले से आतंकी संगठनों की जड़ें हिलीं –भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी ठिकानो को तबाह कर दिया है। इसमें कम से कम 120 आतंकवादियों के मारे जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है। यह संख्या बढ़ भी सकती है। पाकिस्तान केवल 26 लोगों के ही मारे जाने का दावा कर रहा है। माना जा रहा है कि इस हमले में सबसे अधिक नुकसान जैश –ए– मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर को हुआ है और उसके परिवार के 14 सदस्यों को मार गिराया गया है।

जिन 9 ठिकानों को निशाना बनाया गया, उनमें बहावलपुर का मरकज सुभान अल्लाह यह जैश –ए –मोहम्मद का प्रशिक्षण केंद्र है।14 फरवरी 2019 को पुलवामा में हुए हमले में इस केंद्र की मुख्य भूमिका रही है। यहां जैश – ऐ– मोहम्मद के सरगना मालना मसूद अजहर अपने परिवार तथा सहयोगियों के साथ रहता था और आतंकियों को प्रशिक्षित कर उन्हें भारत भेजता था। दूसरा–सबसे बड़ा हमला पंजाब के मुरिदके स्थित मरकजा तैयबा पर हुआ–यह लश्कर ए तैयबा का मुख्य प्रशिक्षण केंद्र है यहां आतंकियों को हर प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है। यहां पर हर वर्ष एक हजार छात्रों की भर्ती की जाती है ओसामा बिन लादेन ने यहां एक मस्जिद व गेस्ट हाउस के निर्माण में आर्थिक मदद की थी व 26/11के मुंबई हमलावरों को प्रशिक्षित किया गया था। इसमें अजमल कसाब भी शामिल था।(पंजाब, पाकिस्तान) के नरावेल जिले में सरजाल तेहर कलां के शकरगढ़ में स्थित यह जैश–ए–मोहम्मद का लांचिग पैड है। यह एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मे संचालित होता है यहसीमासे लगभग 6 किमी दूर है और यहां पर सुरंग निर्माण ड्रोन आदि का संचालन सिखाया जाता है। इसी प्रकार सियालकोट का महमूना जोया सेंटर इसका इस्तेमाल हिजबुल मुजाहिदीन करता है। बरनाला का मरकज अहले हदीस यह भी लश्कर को सेंटर है। कोटली का मरकज अब्बास भी एक मुख्य आतंकी केंद्र है जहां पर बड़े आतंकी सरगना घुसपैठ की योजना बनाते हैं और उन्हें सीमा पार कराने में मदद तक करते हैं। मुजफ्फराबाद का शावाई नाल्लाह कैंप भी एक बहुत बड़ा आतंकी शिविर केंद्र है। मुज़फ्फराबाद में लाल किले के सामने स्थित यह जैश–ए मोहम्मद का मुख्य केंद्र है यहां पर पाकिस्तानी सेना के रेंजर आतंकियो को प्रशिक्षण देते हैं। इन सभी केंद्रों पर किसी भी समय में 100 से 600 आतंकी रहते हैं।

आज यह सभी प्रशिक्षण केंद्र व लॉचिंग पैड ध्वस्त हो चके हैं और पाकिस्तान में हाहाकर मचा हुआ है। भारतीय सेना का बदला पूरा हो जाने के बाद भारतीय सेना के इतिहास में पहली बार दो महिला अधिकारियों ने पूरे घटनाक्रम का पत्रकार वार्ता में विधिवत वीडियो जारी किया और ऑपरेशन सिन्दूर की पूरी जानकारी दी।

सनातन की स्थापना का युद्ध

आचार्य संजय तिवारी

सनातन की स्थापना का युद्ध लड़ते वे अप्रतिम बन चुके हैं। सनातन राज व्यवस्था में एक चक्रवर्ती सम्राट की तरह उन्हें देखा जा रहा है। विशेष रूप से भारत के प्रधान सेवक निर्वाचित होने के बाद उनकी छवि कुछ ऐसी ही दिखती है। राजसत्ता के उनके कार्य उन्हें सम्राट का स्वरूप देते हैं तो दूसरी ओर उनकी आध्यात्मिक यात्रा उन्हें राष्ट्र ऋषि की तरह प्रस्तुत करती है।

इस युगनायक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सामान्य कोई भी व्यक्ति इनको डिकोड नहीं कर सकता। इनके मन की भनक शायद इन्हें भी लगती, ऐसी योजना और रणनीति की सवारी इन्हें आती है। आतंकियों ने नरसंहार कर नारी से कहा कि अपने मोदी को बता देना, मोदी ने उसी नारी के पुछे हुए सिंदूर को अपना संकल्प बना लिए और पाकिस्तान की नापाक जमीन को लाल कर दिया। इसकी सूचना भी प्रसारित कराई तो दो नारियों से। संदेश यह कि भारत की हर नारी साक्षात भवानी है। शक्ति का यह सम्मान देख कर दुनिया हतप्रभ है।

अपनी आलोचना और अपना अपमान सहते नरेंद्र मोदी ठीक केशव की तरह लगते हैं। जब वे प्रजा के बीच होते हैं तो अभिभावक की भूमिका परिलक्षित होती है। राम जैसे विरक्त और कृष्ण जैसी कूटनीति लेकर वे एक साथ चलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह कि नरेंद्र मोदी को परशुराम की प्रतीक्षा भी समझ में आती है और कृष्ण की वे सारी नीतियां भी जिनके साथ सृष्टि, संस्कृति , समाज और सत्ता का संचालन संभव हो सके। यह अलग बात है कि श्री राम त्रेता के मूल्यों के साथ थे जहां शत्रु के रूप में प्रतिनायक रावण था। कृष्ण द्वापर में थे जहां हर प्रतिनायक सीधे शत्रु स्वरूप में सामने था।

आज कलियुग है जहां शत्रु केवल शत्रु नहीं है बल्कि जीवन मूल्यों से विरत सृष्टि और जीवन का भी शत्रु बनकर असुर स्वरूप में सामने और पीठ पीछे भी उपस्थित है। स्वाभाविक है कि इस समय के चक्रवर्ती को कलियुग के केशव का स्वरूप ही लेना होगा, नरेंद्र मोदी का यही स्वरूप अभी विश्व के समक्ष है। सनातन की स्थापना के लिए अनवरत संघर्ष में जुटे नरेंद्र मोदी का लक्ष्य अद्‌भुत है और रणनीति तो बेमिसाल।

भू–राजनीति के क्षितिज पर सबसे बड़े खिलाड़ी वे होते हैं, जो एक ही रणनीति से दुश्मन के कई मोहरों पर हमला कर सकते हैं। मोदी की रणनीतियां ऐसी ही हैं। सत्ता की यात्रा में 2002 से उन्हें ऐसी ही अवस्था में देखा जा रहा है। यह सब उनके साथ नैसर्गिक रूप से जुड़ा है इसलिए भारत की डेढ़ अरब आबादी के अलावा भी विश्व समुदाय नरेंद्र मोदी को लेकर आश्वत और निश्चिंत रहता है। इस तथ्य के प्रमाण उनकी असंख्य विदेशी यात्राओं के दौरान दुनिया के नायकों द्वारा की गई उनके बारे में टिप्पणियां और उन्हें मिलने वाले असंख्य नागरिक सम्मान हैं। नरेंद्र मोदी का भारत अब अद्‌भुत है और वैश्विक धरातल का एक सनातन यात्री भी। मंगलवार और बुधवार की आधी रात को 'ऑपरेशन सिंदूर' की शानदार कामयाबी के साथ, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न सिर्फ पाकिस्तान के जिहादी नेटवर्क को निशाना बनाकर बल्कि न्याय और प्रतिशोध के लिए एक राष्ट्र की सामूहिक पुकार को संतुष्ट करके खुद को इस खेल के महारथी के रूप में स्थापित किया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि ऑपरेशन सिंदूर अभी समाप्त नहीं हुआ है। घोषणा स्पष्ट है कि नरेंद्र मोदी का भारत केवल आतंकी शिविर समाप्त कर रहा है, किसी देश के खिलाफ कोई युद्ध नहीं। यह अलग बात है कि भारत की इस मुहिम से पड़ोसी के चीथड़े उड़ चुके हैं।

यह अद्‌भुत है कि सनातन की स्थापना का युद्ध अभी समाप्त होने भी नहीं जा रहा क्योंकि मोदी का संकल्प है कि आतंक के आकाओं की हर कड़ी को अब मिट्टी में मिला कर ही रुकेंगे। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि विश्व के अधिकांश जनमत भी ऐसा ही कुछ चाह रहा। दुनिया अब कलियुग के इस केशव को अपनी चक्रवर्ती भूमिका को निभाते देख भी रही है और समर्थन भी कर रही है। अभी तो ऑपरेशन सिंदूर जारी है।

श्रृंगवेरपुर में विकसित निषादराज पार्क

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा पौराणिक एवं धार्मिक स्थलों के विकास के क्रम में प्रयागराज स्थित निषादराज एवं भगवान श्रीराम के मिलन स्थली श्रृंगवेरपुर में विकसित निषादराज पार्क धार्मिक आस्था को संरक्षित करने के साथ ही आगन्तुकों के लिए ध्यान और योग सहित विभिन्न गतिविधियों का साक्षी बनने जा रहा है। इस पार्क में फूडकोर्ट, आर्ट गैलरी, बच्चों के लिए खेलने की जगह तथा हराभरा पार्क तथा शांतिपूर्ण वातावरण दर्शकों के लिए विशेष अनुभूति प्रदान करेगा। साथ ही त्रेतायुग में बनवास के दौरान निषादराज का आतिथ्य स्वीकार किया था। दोनों का मिलन मित्रता के लिए प्रेरणा माना जाता है।

यह जानकारी पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने देते हुए बताया कि पार्क का संचालन और रख–रखाव पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप मोड पर किया जाएगा। इस संबंध में टेंडर प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। निजी संचालक द्वारा पार्क में भोजन, योग–ध्यान केंद्र सहित अन्य सुविधाओं का संचालन किया जायेगा। संचालक को प्रदत्त सेवाओं की गुणवत्ता और शुद्धता का विशेष रखना होगा। पार्क परिसर में बना योग एवं ध्यान केंद्र पर्यटकों को योगाभ्यास, मेडिटेशन का अवसर प्रदान करेगा। संचालक यहां विभिन्न पैकेज तैयार कर सकता है और अतिथियों के लिए बनाए गए गेस्ट रूम का उपयोग भी कर सकेगा। इन सेवाओं में ऑडियो–विजुअल माध्यमों का भी प्रयोग किया जा सकेगा ताकि योग और ध्यान के प्रति जागरूकता फैलाई जा सके।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री ने बताया कि निषादराज पार्क रामायण सर्किट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह स्थल धर्म, योग, कला, व्यंजन और ग्रामीण संस्कृति में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा। उन्होंने बताया कि श्रृंगवेरपुर को पर्यटक गांव के रूप में भी विकसित किया गया है, जिससे ग्रामीण पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। पार्क का निर्माण उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति में हुआ है जब निषादराज ने भगवान श्रीराम, सीता और लक्ष्मण को गंगा पार करवाया था और वे श्रृंगवेरपुर में एक रात ठहरे थे।

श्री सिंह ने बताया कि निषादराज पार्क फेज–1 के तहत यहाँ भगवान श्रीराम और निषादराज की 56 फीट ऊँची भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है, जो सामाजिक सौहार्द्र का प्रतीक है। इस पहल से न केवल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय रोजगार, सांस्कृतिक चेतना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

भारत की खुदरा मुद्रास्फीति पिछले छह साल में सबसे निचले स्तर पर

2024 25 में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर 4.6 प्रतिशत हुई, सालाना आधार पर मार्च में 3.34 प्रतिशत की गिरावट दर्ज

भारत में खुदरा मुद्रास्फीति को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) द्वारा मापा जाता है और यह रोजमर्रा की वस्तुओं और सेवाओं की लागत को दर्शाता है। खुदरा मुद्रास्फीति में वित्त वर्ष 2024–25 में उल्लेखनीय रूप से 4.6 प्रतिशत तक गिरावट दर्ज की गई, जो 2018–19 के बाद से सबसे कम है। उल्लेखनीय रूप से मार्च, 2025 के लिए साल–दर–साल मुद्रास्फीति दर 3.34 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की गई, जो फरवरी, 2025 से 27 आधार अंक कम है। यह अगस्त, 2019 के बाद से सबसे कम मासिक मुद्रास्फीति दर है। ये आंकड़े आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हुए मूल्य वृद्धि को रोकने के निरंतर प्रयास को दर्शाते हैं।

इन परिणामों को प्राप्त करने में सरकार के रणनीतिक हस्तक्षेप महत्वपूर्ण रहे हैं। मुख्य उपायों में आवश्यक खाद्य पदार्थों के बफर स्टॉक को मजबूत करना और उन्हें समय–समय पर खुले बाजारों में जारी करना, साथ ही चावल, गेहूं का आटा, दालें और प्याज जैसी मंडी की सब्सिडी वाली खुदरा बिक्री शामिल है। महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थों पर सरलीकृत आयात शुल्क, जमाखोरी को रोकने के लिए सख्त स्टॉक सीमा और आवश्यक वस्तुओं पर कम जीएसटी दरों ने कीमतों के दबाव को और कम कर दिया है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत एलपीजी सहायता और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना जैसी लक्षित सब्सिडी ने कमजोर परिवारों को बढ़ती खाद्यान्न लागत से बचाया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि कम मुद्रास्फीति का लाभ उन लोगों तक पहुंचे जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

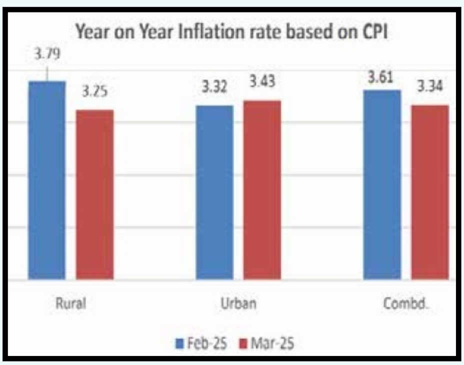

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक क्या है?

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) समय के साथ खुदरा कीमतों के सामान्य स्तर में परिवर्तन को मापने के लिए उपयोग किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतकों में से एक है। यह दर्शाता है कि परिवारों को भोजन, कपड़े, आवास और ईंधन जैसी वस्तुओं और सेवाओं की एक निश्चित मात्रा पर कितना खर्च करने की आवश्यकता है। भारत में सीपीआई को सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा संकलित किया जाता है और वर्तमान में आधार वर्ष 2012 का उपयोग करके इसकी गणना की जाती है। समय के साथ इस निश्चित मात्रा की लागत को ट्रैक करके सीपीआई दिखाता है कि कीमतें कैसे बढ़ती या घटती हैं, जो उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति और उनके समग्र कल्याण को प्रभावित करती हैं।

सीपीआई वस्तुओं और सेवाओं की इस निश्चित मात्रा की वर्तमान लागत की तुलना पिछली अवधि में इसकी लागत से करके मूल्य परिवर्तनों को मापता है। चूंकि इस सामग्री को मात्रा और गुणवत्ता के संदर्भ में स्थिर रखा जाता है, इसलिए सूचकांक में कोई भी परिवर्तन केवल कीमतों में परिवर्तन को दर्शाता है। जब कीमतें बढ़ती हैं, हैं, तो सीपीआई बढ़ जाती है, जो मुद्रास्फीति का संकेत देती है; जब वे गिरती हैं, तो सीपीआई घट जाती है, जो कम मुद्रास्फीति या अपस्फीति का संकेत देती है।

मूल रूप से सीपीआई के आंकड़े श्रमिकों के जीवन–यापन की लागत में परिवर्तन को ट्रैक करने के लिए विकसित किए गए थे ताकि उनकी मजदूरी को मूल्य उतार–चढ़ाव के अनुरूप समायोजित किया जा सके। हालांकि, समय के साथ सीपीआई एक व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले मैक्रो–इकॉनॉमिक टूल के रूप में विकसित हुआ है। यह अब मुद्रास्फीति को लक्षित करने, मूल्य स्थिरता की निगरानी करने और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मौद्रिक नीति निर्णयों का मार्गदर्शन करने के लिए एक प्रमुख मानक है। यह वास्तविक आर्थिक वृद्धि को मापने के लिए राष्ट्रीय खातों में एक अपस्फीतिकारक के रूप में भी कार्य करता है।

भारत में सामान्य सीपीआई (सीपीआई–संयुक्त) के साथ–साथ विभिन्न जनसंख्या समूहों को ध्यान में रखते हुए खंड–विशिष्ट सूचकांक भी प्रकाशित किए जाते हैं:

- सीपीआई (आईडब्ल्यू) औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
- सीपीआई (एएल) कृषि श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
- सीपीआई (आरएल) – ग्रामीण श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

ये सूचकांक मजदूरी संशोधन, ग्रामीण नियोजन और जनसंख्या के विशिष्ट क्षेत्रों में मुद्रास्फीति के रुझान को समझने में मदद करते हैं।

मार्च, 2025 के लिए मुख्य बिंदु

खाद्य मुद्रास्फीतिः उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक

(सीएफपीआई) पर आधारित साल–दर–साल खाद्य मुद्रास्फीति मार्च, 2025 में 2.69 प्रतिशत रही, जो नवंबर, 2021 के बाद सबसे कम है। यह पिछले महीने से 106 आधार अंकों की तीव्र गिरावट को दर्शाता है।

ग्रामीण खाद्य मुद्रास्फीतिः 2.82 प्रतिशत शहरी खाद्य मुद्रास्फीतिः 2.48 प्रतिशत गिरावट के कारकः खाद्य कीमतों में समग्र कमी का कारण सब्जियां, अंडे, दालें और उत्पाद, मांस और मछली, अनाज और उत्पाद, दूध और उत्पाद जैसी प्रमुख श्रेणियों में महंगाई में गिरावट रही।

ग्रामीण मुद्रास्फीतिः ग्रामीण क्षेत्रों में हेडलाइन और खाद्य मुद्रास्फीति दोनों में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई।

फरवरी में हेडलाइन मुद्रास्फीति 3.79 प्रतिशत से गिरकर मार्च में 3.25 प्रतिशत हो गई।

खाद्य मुद्रास्फीति 4.06 प्रतिशत से गिरकर 2.82 प्रतिशत हो गई।

शहरी मुद्रास्फीतिः शहरी क्षेत्रों में हेडलाइन मुद्रास्फीति फरवरी में 3.32 प्रतिशत से बढ़कर मार्च में 3.43 प्रतिशत हो गई। हालांकि, खाद्य मुद्रास्फीति 3.15 प्रतिशत से घटकर 2.48 प्रतिशत हो गई।

आवास मुद्रास्फीतिः शहरी क्षेत्र के लिए आवास मुद्रास्फीति फरवरी में 2.91 प्रतिशत से थोड़ी बढ़कर मार्च, 2025 में 3.03 प्रतिशत हो गई।

ईंधन और बिजलीः इस श्रेणी में मुद्रास्फीति फरवरी में –1.33 प्रतिशत से बढ़कर मार्च में 1.48 प्रतिशत हो गई, जिसमें ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्र शामिल हैं।

शिक्षा मुद्रास्फीतिः शिक्षा से सम्बंधित मुद्रास्फीति में मामूली वृद्धि देखी गई, जो पिछले महीने के 3.83 प्रतिशत से बढ़कर 3.98 प्रतिशत हो गई।

स्वास्थ्य मुद्रास्फीतिः स्वास्थ्य खंड में कीमतों में मामूली वृद्धि देखी गई, मार्च में मुद्रास्फीति 4.26 प्रतिशत रही, जबकि फरवरी में यह 4.12 प्रतिशत थी।

परिवहन और संचारः इस श्रेणी में मुद्रास्फीति फरवरी में 2.93 प्रतिशत की तुलना में मार्च, 2025 में बढ़कर 3.30 प्रतिशत हो गई।

सबसे अधिक मुद्रास्फीति वाली वस्तुएंः मार्च, 2025 में सबसे अधिक साल–दर–साल मुद्रास्फीति वाली शीर्ष पांच वस्तुएं नारियल तेल (56.81 प्रतिशत), नारियल (42.05 प्रतिशत), सोना (34.09 प्रतिशत), चांदी (31.57 प्रतिशत) और अंगूर (25.55 प्रतिशत) थीं।

सबसे कम मुद्रास्फीति वाली वस्तुएंः कीमतों में सबसे अधिक गिरावट वाली वस्तुएं अदरक (–38.11 प्रतिशत), टमाटर (–34.96 प्रतिशत), फूलगोभी (–25.99 प्रतिशत), जीरा (–25.86 प्रतिशत) और लहसुन (–25.22 प्रतिशत) रही। खुदरा मुद्रास्फीति में लगातार तीसरे साल कमी आई। भारत में खुदरा मुद्रास्फीति पिछले तीन वित्तीय वर्षों में लगातार

नीचे की ओर चलायमान रही है, जो 2022–23 में 6.7 प्रतिशत से गिरकर 2023–24 में 5.4 प्रतिशत और 2024–25 में 4.6 प्रतिशत हो गई है। यह निरंतर कमी भारतीय रिजर्व बैंक की संतुलित मौद्रिक नीति और भारत सरकार द्वारा आपूर्ति–पक्ष की बाधाओं को कम करने और आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को स्थिर करने के लिए किए गए केंद्रित हस्तक्षेपों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। गिरावट की प्रवृत्ति ने जीवन–यापन की लागत के दबाव को कम करने और आर्थिक विकास के लिए अधिक स्थिर वातावरण को बढ़ावा देने में मदद की है।

उच्च कीमतों से स्थिरता तकः मुद्रास्फीति नियंत्रण का एक दशक 2009–10 और 2013–14 के बीच भारत ने उच्च मुद्रास्फीति का एक लंबी अवधि का सामना किया, जिसमें औसत वार्षिक दर दोहरे अंकों में रही। देश भर के परिवारों ने खाद्य और ईंधन की कीमतों में भारी वृद्धि का खामियाजा भुगता, इन वजह से क्रय शक्ति में कमी आ गई थी और उपभोक्ताओं और व्यवसायों दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण माहौल बन गया था। व्यापक समय सीमा पर देखें तो 2004–05 और 2013–14 के बीच औसत वार्षिक मुद्रास्फीति 8.2 प्रतिशत रही, जिससे पता चलता है कि यह एक खुदरा कीमतों में काफी उतार–चढ़ाव वाला दशक था।

इसके विपरीत 2015–16 से 2024–25 तक की दस साल की अवधि में मुद्रास्फीति के दबाव में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई, जिसमें औसत दर 5 प्रतिशत तक कम हो गई। यह महत्वपूर्ण कमी बेहतर आपूर्ति–पक्ष प्रबंधन, राजकोषीय विवेक और मुद्रास्फीति–लक्ष्यित मौद्रिक नीति के माध्यम से मूल्य स्थिरता में सुधार करने के लिए सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक दोनों के निरंतर प्रयासों को दशांती है। उच्च मुद्रास्फीति के दौर से अधिक स्थिर मूल्य निर्धारण वातावरण में बदलाव ने उपभोक्ताओं के लिए अधिक निश्चितता प्रदान की है और दीर्घकालिक आर्थिक विकास की नींव को मजबूत किया है। निष्कर्ष में हाल के वर्षों में खुदरा मुद्रास्फीति में लगातार गिरावट भारत की आर्थिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह भारत सरकार द्वारा समन्वित प्रयासों की सफलता है। सक्रिय मौद्रिक नीतियों से लेकर लक्षित राजकोषीय उपायों तक, दृष्टिकोण समावेशी और प्रभावी दोनों रहा है। यह उपभोक्ताओं, विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को मूल्य उतार–चढ़ाव से होने वाली अस्थिरता से बचाते हैं। 2018–19 के बाद से अब तक मुद्रास्फीति अपने सबसे निचले स्तर पर है, भारत ने न केवल व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत किया है, बल्कि सतत विकास के लिए एक सक्षम वातावरण भी बनाया है। यह प्रक्षेप पथ विकास लक्ष्यों से समझौता किए बिना देश में लचीलेपन और प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए है।

चाफेकर बन्धुओं का बलिदान

रमेश शर्मा

भारत को स्वतंत्रता सरलता से नहीं मिली। इसके लिये असंख्य बलिदान हुये हैं। लाखों हुतात्माओं के नाम तो इतिहास के पन्नों में भी नहीं मिलती। फिर भी कुछ नाम खोजे जा रहे हैं। आठ मई का दिन चार बलिदानियों की स्मृति का दिन है।

1912 में दिल्ली के चांदनी चौक में हुए लॉर्ड हार्डिग बम कांड में मास्टर अमीर चंद, भाई बालमुकुंद और मास्टर अवध बिहारी को 8 मई 1915 को फांसी दी गयी थी। इनमें भाई बाल मुकुन्द गुरु तेगबहादुर के साथ बलिदान हुये भाई मतिदास के वंशज थे। महान क्रान्तिकारी भाई परमानन्द इनके चचेरे भाई थे। भाई परमानंद के चिरंजीव स्वतंत्रता संग्राम भाई महावीर मध्यप्रदेश में राज्यपाल रहे। इन क्राँतिकारियों पर आरोप था कि इन्होंने 1912 में चांदनी चौक में लार्ड हार्डिग पर बम फेंका था। हालांकि इनके खिलाफ कोई प्रमाण नहीं था। फिर भी अंग्रेजी शासन ने शक के आधार पर इनको फांसी की सजा सुनाई। जिस स्थान पर इन्हें फांसी दी गई, वहां शहीद स्मारक बना दिया गया है जो दिल्ली गेट स्थित मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में स्थित है।

भाई अमीर चंद का जन्म 1869 में हैदराबाद की विधानसभा के सेक्रेटरी के घर हुआ था। उनके मन में देश भक्ति की मान्यता इतनी प्रबल थी कि स्वदेशी आंदोलन के दौरान हैदराबाद के बाजार में उन्होंने स्वदेशी स्टोर खोला जहां वह देशभक्तों की तस्वीरें तथा क्रांतिकारी साहित्य बेचते थे। 1919 में दिल्ली में भी स्वदेशी प्रदर्शनी लगाई। 1912 में दिल्ली में उस समय के वायसरोय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की घटना में सक्रिय भूमिका निभाई । 1914 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

क्रान्तिकारी भाई अवध बिहारी

इनका जन्म–14 नवम्बर, सन 1889 को कच्चा कटरा मौहल्ला, चांदनी चौक, दिल्ली में हुआ था। ये भी बहुचर्चित दिल्ली केस में शामिल थे। क्रांतिवीर अवधबिहारी ने केवल 25 वर्ष की अल्पायु में ही अपना शीश मां भारती के चरणों में समर्पित कर दिया।

अवधबिहारी का जन्म चांदनी चौक दिल्ली के मोहल्ले कच्चा कटरा में 14 नवम्बर सन 1889 को हुआ था. इनके पिता श्री गोविन्द लाल श्रीवास्तव जल्दी ही स्वर्ग सिधार गये, अब परिवार में अवधबिहारी उनकी मां तथा एक बहिन रह गयी। परिवार ने बड़े संघर्ष के दिन देखे। पर अवधबिहारी बहुत मेधावी थे. गणित में सदा उनके सौ प्रतिशत नंबर आते थे। उन्होंने सब परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। उन्हें पढ़ने केलिये छात्रवृत्ति मिली, परिवार चलाने के लिये उन्होंने टयूशन की। अवधबिहारी ने 1908 में सेंट स्टीफेंस कालेज से स्वर्ण पदक लेकर बी.ए किया था। दिल्ली में उनकी मित्रता मास्टर अमीरचंद आदि क्रांतिकारियों से हुई और वे क्राँतिकारी आँदोलन से जुड़ गये। तब मास्टर अमीरचन्द, लाला हनुमन्त सहाय, मास्टर अवध बिहारी, भाई बालमुकुन्द और बसन्त कुमार विश्वास आदि क्राँतिकारियों द्वारा वायसराय हार्डिंग को बम से उड़ाने की योजना बनी। 23 दिसम्बर सन 1912 को दिल्ली के चांदनी चौक स्थित पंजाब नेशनल बैंक की छत से बम फेंका गया। वायसराय हाथी पर बैठा था. निशाना चूक जाने से वह मरा तो नहीं, पर घायल हो गया। शासन ने इसकी जानकारी देने वाले को एक लाख रुपये के पुरस्कार की घोषणा की। शासन ने कुछ लोगों को पकड़ा। जिनमें से दीनानाथ के मुखबिर बन गया और उसने इस विस्फोट में शामिल सभी क्रांतिकारियों के नाम बता दिये। सभी गिरफ्तार कर लिये गये। उन दिनों देश में अनेक विस्फोट हुए थे। अंग्रेजी पुलिस ने उन काँडों में भी अवधबिहारी को शामिल दिखाया। सभी क्राँतिकारियों को फाँसी की सजा सुनाई गई। अवध बिहारी को सजा सुनाते

हुए न्यायाधीश ने लिखा–"अवधबिहारी जैसा शिक्षित और मेधावी युवक गौरव हो सकता है, यह साधारण व्यक्ति से हजार दर्जे ऊंचा है, इसे फांसी की सजा देते हुए हमें दुख हो रहा है." 8 मई सन 1915 ई. इनकी फांसी की तिथि निर्धारित की गयी।

वासुदेव हरि चाफेकर का बलिदान

वासुदेव चाफेकर का जन्म 1880 में कोंकण में चित्पावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने मराठी भाषा के माध्यम से शिक्षा ले ली। समय के साथ, वह पुणे में चिंचवड में बस गए। बचपन में, तीनों भाइयों ने पिता की मदद करने के लिए हरि कीर्तन की मदद की। इसने चाफेकर भाइयों की शिक्षाओं में विभाजन किया।

वासुदेव चाफेकर ने अपने भाइयों, दामोदर चाफेकर और बालकृष्ण चाफेकर के साथ राजनीति और क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने हथियारों के साथ भारतीय युवाओं को प्रशिक्षण दिया।

पुणे में राजनीतिक विकास से प्रेरित होकर, ये भाई क्रांतिकारी आंदोलन में बदल गए। अंग्रेजों के ब्रिटिश कानून की पुरानी सहमति के लिए अंग्रेजों का एक मजबूत विरोध था। तिलक ने अंग्रेजों के खिलाफ केसरी पर हमला किया, जिन्होंने भारतीय संस्कृति में हस्तक्षेप किया। तीनों भाई इस कॉल से प्रेरित थे। उन्होंने लोगों का आयोजन किया इसी समय, अंग्रेजों ने पुणे में प्लेग की जगह राक्षस पैटर्न पहन कर वाल्टर चार्ल्स रैंडला को भारत में आमंत्रित किया। रंदन ने उपचारात्मक उपायों के अनिवार्य कार्यान्वयन शुरू किया ऐसा करने में, उन्होंने सामाजिक अशांति को दूर करने की कोशिश की। इससे अंग्रेजों के खिलाफ चाफेकर भाई के नफरत का कारण हुआ। उन्होंने जवाबी कार्रवाई करने के लिए एक योजना तैयार की। भाइयों ने अपने खराब व्यवहार के लिए पुणे में रैंड को मारने की साजिश रची। उस समय, हीराम महोत्सव विक्टोरिया की रानी के शासनकाल के साथ मनाया गया था। सब कुछ प्रकाश हो गया था। एक भोज भी आयोजित किया गया था।

22 जून 1897 को दामोदर चाफेकर, एक जवान आदमी ने गाड़ी छोड़ दी और गणेश ख़िदें में इंतजार कर रहे थे, जो रात के मध्य रैंड पर चक्कर लगाकर घर से बाहर निकल गया। रैंड कुछ समय तक कोमा में बना था और अंततः 3 जुलाई 1897 को मृत्यु हो गई। इसी समय, दामोदर के भाई बालकृष्ण ने लेफ्टिनेंट एरिस्ट पर गोली चलाई जो किरण के साथ बैठे थे।

चाफेकर भाइयों को बचने में सफल होने के बाद, तीन भाइयों को बाद में गिरफ्तार किया गया। दामोदर को मुंबई में गिरफ्तार किया गया था और 18 अप्रैल 18 9 8 को उन्हें यरवदा जेल में फांसी दी गई थी। उसके बाद, वासुदेव को 8 मई 18 99 को फांसी दी गई और बालकृष्ण को 16 मई, 18 99 को फांसी दी गई, और तीन चाफेकर भाई शहीद थे।

पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर विशेषांक

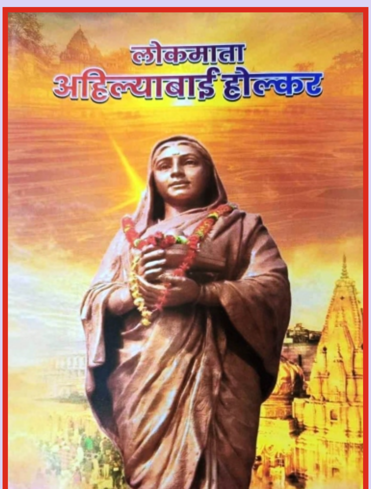

कमल ज्योति, मई द्वितीय अंक, लोकमाता अहिल्याबाई होलकर विशेषांक होगा। अपनी प्रतिया सुरक्षित करायें। इस अंक हेतु आलेख/कविता/विज्ञापन प्रकाशन हेतु 20 मई 2025 तक ई-मेल-- bjpkamaljyoti@gmail.com पर लिये जायेंगे।

'नेशनल हेराल्ड का मामला धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग का मामला है'

भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं केन्द्रीय मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी ने 17 अप्रैल, 2025 को केन्द्रीय कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए नेशनल हेराल्ड मामले में कांग्रेस नेताओं की संलिप्तता पर बड़े खुलासे किए। श्री पुरी ने बताया कि दिल्ली के बहादुरशाह जफर मार्ग पर स्थित प्लॉट नंबर 5। की बिल्डिंग में नेशनल हेराल्ड की कभी प्रेस चल ही नहीं रही थी, जबकि तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा प्रेस चलाने के लिए ही बहुत ही कम दर पर भूमि उपलब्ध करायी गयी थी। कांग्रेस नेताओं ने इन बिल्डिंग्स का निजी और व्यवसायिक उपयोग किया और कांग्रेस कार्यकर्ताओं सहित पूरे देश को धोखा दिया।

श्री पुरी ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा यह केस फाइल किए जाने पर कांग्रेस पार्टी के नेता आरोप लगा रहे हैं कि यह मोदी सरकार की बदले की कार्रवाई है और केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है। भाजपा का कांग्रेस से बस इतना कहना है कि वह थोड़ा आत्ममंथन करें। कांग्रेस पार्टी अपने कार्यकर्ताओं को गुमराह कर रही है, असल में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी के नेतृत्व के खिलाफ प्रदर्शन करना चाहिए। नेशनल हेराल्ड का इतिहास बहुत पुराना है, जिसे 1937 में स्थापित किया गया था। हालांकि, 2008 में इस अखबार की छपाई बंद हो गई थी और इसके बाद नेशनल हेराल्ड केस 2012–13 के आसपास शुरू हुआ। इस मामले में भाजपा सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं था। असली प्रश्न यह है कि कैसे महज 50 लाख रुपये की रकम से 2000 करोड़ रुपये की संपत्ति हासिल की गई?

उन्होंने कहा कि यह नेशनल हेराल्ड का मामला धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग का मामला है और पूरी तरह से शट एंड क्लोज केस हैं। 2014 में जब यह मामला मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट के समक्ष आया था, उस समय मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट ने स्पष्ट रूप से कहा था कि 'यह प्रतीत होता है कि यंग इंडिया लिमिटेड (वाईआईएल) को सार्वजनिक धन को निजी उपयोग में बदलने के उद्देश्य के साथ बनाया गया। यह मामला 2014 से लगातार विभिन्न अदालतों में घूमता रहा है और कांग्रेस पार्टी ने अपने वकीलों का उपयोग करके इसे कई बार टालने का प्रयास किया है। यंग इंडिया लिमिटेड को 2010 में एक सेक्शन 25 के तहत कंपनी के रूप में रजिस्टर्ड किया गया था, जिसका उद्देश्य चैरिटी था और इसकी पूंजी 5 लाख रुपये थी। इसके बावजूद, कांग्रेस पार्टी ने यह लोन बढ़ाकर 80–90 करोड़ रुपए तक कर दिया और अब सवाल यह उठता है कि इसे चुकाने के लिए कांग्रेस पार्टी ने क्या कदम उठाए हैं? इसके बाद, 50 लाख रुपये की राशि प्राप्त कर 2000 करोड़ रुपये की संपत्ति हासिल की गई।

प्रमुख बिंदु

- कांग्रेस की वास्तविक रुचि अखबार प्रकाशित करने में नहीं थी, यह परिवार पहले से ही एजेएल की संपत्तियों को लेकर 'रियल एस्टेट' में सक्रिय था।
- बहादुरशाह जफर मार्ग पर स्थित प्लॉट नंबर 5। को 1963 में एजेएल को 1.25 लाख प्रति एकड़ की दर से अलॉट किया गया था, जिसमें प्रेस और ऑफिस होना प्रस्तावित था, लेकिन 2016 में जांच में पता चला कि इस बिल्डिंग में कभी प्रिंटिंग प्रेस थी ही नहीं।
- इस बिल्डिंग में बेसमेंट पूरी तरह से खाली था, जबकि ग्राउंड और फर्स्ट फ्लोर पर पासपोर्ट ऑफिस किराए पर दिया गया था जबकि सेकंड और थर्ड फ्लोर टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज को किराए पर दिया गया था, जिससे बड़ी रकम में किराया प्राप्त हुआ।
- नवंबर 2010 में, गांधी परिवार ने एक नई कंपनी बनाई, जिसका नाम था 'यंग इंडिया' और 90 करोड़ के बकाया लोन को भरने के लिए केवल 50 लाख का भुगतान किया।
- केवल 50 लाख में एजेएल के 99þ शेयर यंग इंडिया को ट्रांसफर किए गए, जबकि एजेएल की संपत्तियों की कीमत 2000 करोड़ से अधिक थी। कुछ लोग तो यह दावा करते हैं कि इनकी वास्तविक कीमत 5000 करोड़ के करीब है।
- 2008 में नेशनल हेराल्ड अखबार की छपाई बंद हो गई थी और 2012–13 में यह मामला शुरू हुआ। इस मामले में भाजपा सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं था।
- 2014 में जब यह मामला मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट के समक्ष आया तो उस समय मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट ने स्पष्ट रूप से कहा था कि 'यह प्रतीत होता है कि यंग इंडिया लिमिटेड सार्वजनिक धन को निजी उपयोग में बदलने के उद्देश्य के साथ बनाया गया।'
- कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी के उन नेताओं के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, जिन्होंने चैरिटेबल उद्देश्य का गलत इस्तेमाल किया और पार्टी के संसाधनों को निजी लाभ के लिए उपयोग किया।
- 2008 में अखबार के बंद होने पर खड़गे सहित बाकी कांग्रेस नेता क्या कर रहे थे? कृपया एक सूची दें कि उस समय कांग्रेस ने उस अखबार को चलाने के लिए क्या–क्या प्रयास किए?

बाबासाहेब आंबेडकर

राष्ट्र सर्वप्रथम और राष्ट्र सर्वोपरि की भावना के अग्रदूत

राजनाथ सिंह

मारे संविधान निर्माता एवं अग्रणी राष्ट्र–निर्माताओं में से एक विभूति बाबासाहेब भीमराव रामजी आंबेडकर जी की आज 135 वीं जयंती है। बाबासाहेब ने दलितों और हाशिए पर खड़े लोगों के उत्थान के लिए आजीवन कार्य किया। बाबासाहेब समाज के कमजोर वर्गों के जनप्रिय नायक और संघर्ष के प्रतीक पुरुष हैं और हमेशा रहेंगे। लेकिन बाबासाहेब के योगदान और विरासत के साथ सबसे बड़ा अन्याय यह हुआ है कि उनको सिर्फ एक दलित नेता के रूप में सीमित कर दिया गया है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी बाबासाहेब को आधुनिक भारत के एक सबसे अग्रणी विचारक के रूप में भी देखा जाना चाहिए। ह

यह सर्वविदित है कि स्कूल के दिनों में बाबासाहेब को उस नल से पानी पीने की अनुमति भी नहीं थी, जिससे नल से बाकी सब बच्चे पीते थे। ऐसे में अक्सर वह जितने वक्त स्कूल में रहते, प्यासे रहते थे। एक दिन, जब असहनीय प्यास के कारण उन्होंने इस अमानवीय प्रथा का उल्लंघन किया तो उन्हें न केवल अपमानित किया गया, बल्कि कठोर दंड भी दिया गया। जीवनपर्यंत ऐसे अनेक हृदय विदारक अनुभवों के बाद कोई भी सामान्य व्यक्ति या तो अपने भाग्य को कोसकर रह जाता या हिंसा का रास्ता चुनता। लेकिन बाबासाहेब आंबेडकर ने अपने भीतर के गुस्से को सकारात्मक रूप देते हुए शिक्षा का मार्ग चुना। जिस समय उनके समाज के लोगों को शिक्षा लेने के अनुमति भी नहीं थी उस समय बाबासाहेब ने एमए, एमएससी, पीएचडी, डीएससी, डीलिट और बार–एट–लॉ की उपाधियां हासिल की। उन्होंने कोलंबिया

और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे प्रतिष्ठित विदेशी संस्थानों से शिक्षा प्राप्त की। डॉ. आंबेडकर महान समाज सुधारक तो थे ही वह उत्कृष्ट बुद्धिजीवी, प्रकाण्ड विद्वान, कानूनविद, अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने राजनीति, नैतिकता, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, कानून और धर्मशास्त्र आदि व्यापक विषयों पर विस्तार से लिखा है। डॉ आंबेडकर के विचार, लेख और दर्शन पढ़कर उनकी विद्वता की विशालता का पता चलता है। उनके लेखन में जो नवीनता, गहन अध्ययन एवं चिंतन मिलता है वह विपुल है। वे अगर चाहते तो विदेश में आकर्षक वेतन प्राप्त करके अपना जीवन सुख और प्रतिष्ठा के साथ व्यतीत कर सकते थे, लेकिन उन्होंने अपनी मातृभूमि को अपनी कर्म भूमि बनाया।

उनका यह भी मानना था कि चरित्र, शिक्षा से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। वे मानते थे कि एक ऐसा शिक्षित व्यक्ति जिसमें चरित्र और विनम्रता की कमी हो, हिंसक जीव से भी अधिक खतरनाक होता है। और उसकी शिक्षा से यदि गरीबों की हानि हो तो वह व्यक्ति समाज के लिए अभिशाप है।

बाबासाहेब के चरित्र का एक और पहलू जो बहुत कम लोग जानते हैं वह है कि वे एक महान संस्थान निर्माता भी थे। आज भारत में आरबीआई और केंद्रीय जल आयोग जैसी कई संस्थाएं बाबासाहेब की दूरदर्शिता का ही परिणाम हैं। अर्थशास्त्र पर अपनी महारत के आधार पर उन्होंने भारत के सामने आने वाली मौद्रिक समस्याओं का विश्लेषण किया था। अपनी थीसिस में उन्होंने विस्तार से बताया था कि कैसे अंग्रेजों द्वारा बनाया गया फिक्सडएक्सचेंज सिस्टम (पि•मक म•बींदहम `लेजमउ) भारत में केवल अंग्रेजों के ही हितों की पूर्ति करता है। उनकी यही थीसिस भारत्तीय रिजर्व बैंक के निर्माण का आधार बनी।

बाबासाहेब का लोकतंत्र में अटूट विश्वास था। उनका मानना था कि कोई भी राज्य तब तक लोकतांत्रिक नहीं हो सकता है, जब तक समाज लोकतांत्रिक न हो। उनका यह भी मानना था कि जब तक समाज में एक नैतिक व्यवस्था न हो, लोकतंत्र का विचार कल्पना ही रहेगा। यह भी कहा जा सकता है कि जैसे स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्य एक साथ सम्पूर्ण होते हैं उसी प्रकार लोकतंत्र, राजनीति और नैतिकता एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं।

बाबासाहेब मानते थे कि जहां भी सामाजिक व्यवस्था नैतिक और समतामूलक नहीं होंगी, उस समाज में लोकतंत्र जीवित ही नहीं रह पाएगा। गांधीजी की तरह, बाबासाहेब सामाजिक सुधार के लिए प्रतिबद्ध थे क्योंकि वह भारत के भविष्य, इसके लोकतंत्र और अर्जित स्वतंत्रता के बारे में बहुत चिंतित थे। उनकी आशंकाएं संविधान सभा में उनके अंतिम भाषण में व्यक्त हुई हैं। इसमें बाबासाहेब ने कहा कि हमें अपने खून की आखिरी बूंद तक अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित होना होगा। उन्होंने चेतावनी दी थी कि हमारी अकर्मण्यता के कारण भारत एक बार फिर से अपना लोकतंत्र और स्वतंत्रता खो सकता है। पूना में अपने एक संबोधन में उन्होंने कहा था कि हमें एक लोकतांत्रिक संविधान मिला है लेकिन संविधान बनाकर हमारा काम पूरा नहीं हुआ बल्कि बस

शुरू हुआ है।
संविधान के मुख्य निर्माता के तौर पर उनकी यह बात उनकी दूरदर्शी सोच की प्रमाण है। भारत लगभग आठ दशकों से बाबासाहेब द्वारा दिखाए गए लोकतंत्र के मार्ग पर अनवरत आगे बढ़ रहा है, लेकिन आज कुछ लोगों द्वारा जाति, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर सामाजिक विभाजन का कुप्रयास किया जाता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ये विभाजनकारी प्रयास कभी सफल न हों। इन कुचक्रों को समझने के लिए और रोकने के लिए, हमें डॉ. आंबेडकर को और अधिक पढ़ना चाहिए। उदाहरण के लिए बाबासाहेब आर्यन द्रविड़ विभाजन की असत्य कल्पना का लाभ उठा सकते थे लेकिन उन्होंने आर्यन–द्रविड़ विभाजन और 'आर्यन इन्वेजन थ्योरी' को सिरे से नकार दिया था। बाबासाहेब ने 1918 में प्रकाशित एक शोधपत्र में लिखा था कि आर्यन या द्रविड़ विभाजन जैसी कोई बात होती है इस बात से ही भारत के लोग अनभिज्ञ थे। जब विदेशी स्कॉलर्स ने भारत में आकर इस प्रकार की विभाजन रेखाएं खींची तब यह विभाजन बना। अन्यत्र, उन्होंने कई उदाहरणों का हवाला दिया जहां यजुर्वेद और अथर्ववेद के ऋषियों ने शूद्रों के लिए मंगल बातें कही हैं और दिखाया है कि कई अवसरों पर 'शूद्र' परिवार में जन्में व्यक्ति भी राजा बने। उन्होंने इस सिद्धांत को भी स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया था कि तथाकथित 'अस्पृश्य' लोग 'आर्यों' और 'द्रविड़ों' से नस्लीय रूप से भिन्न हैं।
इस सबके साथ ही जो लोग अपने संकीर्ण और सांप्रदायिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए भाषा के मुद्दे का दुरुपयोग करने का प्रयास करते हैं, उन्हें राष्ट्र की एकता और इसमें एक भाषा की भूमिका पर डॉ. आंबेडकर के विचारों को पढ़ना चाहिए। 10 सितंबर, 1949 को उन्होंने संविधान सभा में एक संशोधन पेश किया जिसमें संस्कृत को संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में समर्थन दिया गया था। 'भाषावार राज्यों के संबंध में विचार' में, बाबासाहेब ने कहा है, "भाषा, संस्कृति की संजीवनी होती है। चूंकि भारतवासी एकता चाहते हैं और एक समान संस्कृति विकसित करने के इच्छुक हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह भारी कर्तव्य है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएं। यदि मेरा सुझाव स्वीकार नहीं किया जाता तो भारत, भारत कहलाने का पात्र नहीं रहेगा। वह विभिन्न जातियों का एक समूह बन जाएगा, जो एक–दूसरे के विरुद्ध लड़ाई–झगड़े और प्रतिस्पर्धा में रत रहेगा।" यह ध्यान देने योग्य है कि बाबासाहेब मूल रूप से हिंदी भाषी नहीं थे, फिर भी उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्होंने सदैव राष्ट्र को सबसे पहले रखा।
22 दिसंबर, 1952 को पुणे में दिए अपने एक भाषण में डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि लोकतंत्र का स्वरूप और उद्देश्य समय के साथ बदलते रहते हैं और 'आधुनिक लोकतंत्र' का उद्देश्य लोगों का कल्याण करना है। इसी मूलमंत्र के पिछले साथ 10 वर्षों में हमारी सरकार लगभग 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने में सफल रही है। हमने लगभग 16 करोड़ घरों में जल पहुंचाने का काम किया है। हमने गरीब परिवारों के लिए लगभग 5 करोड़ घर बनवाए हैं।
वर्ष 2023 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पीएम जनमन अभियान की शुरुआत की गई है जिसके माध्यम से हमारे PVTGs समुदायों के लोगों का व्यापक विकास किया जा रहा है और अनेक मूलभूत सुविधाओं को च्टज्ळ समुदाय के लोगों तक पहुंचाया जा रहा है।
हमारी सरकार द्वारा वर्ष 2018 में 'आयुष्मान भारत' योजना की शुरुआत भी की गई है जिसके माध्यम से जन–जन तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमारी सरकार के द्वारा किए गए कल्याणकारी कार्य संविधान और लोकतंत्र के प्रति हमारी समर्पण भावना और बाबासाहेब के प्रति हमारी श्रद्धा को दर्शाते हैं।
डॉ. आंबेडकर ने सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के साथ राजनीतिक लोकतंत्र की कल्पना की थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2047 तक 'विकसित भारत' बनाने का लक्ष्य रखा है। यह लक्ष्य बाबासाहेब के विजन के अनुरूप है। साथ ही, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आने वाली पीढ़ियां बाबासाहेब की महान विरासत और योगदान के बारे में वे अधिक से अधिक जानें, हमारी सरकार द्वारा डॉ. आंबेडकर से जुड़े पांच स्थानों यानी 'पंच तीर्थ' को विकसित किया गया है।
पिछले महीने जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नागपुर में दीक्षाभूमि का दौरा किया था, तो उन्होंने बाबासाहेब आंबेडकर के सपनों के भारत को साकार करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया था। बाबासाहेब की जयंती हम सभी भारतीयों द्वारा उनके द्वारा दिए गए मूल्यों और आदर्शों के प्रति अपनी प्रतिज्ञा को दोहराने का अवसर है। बाबासाहेब की विरासत को उचित सम्मान देने के लिए हमें उनके विचारों को आत्मसात् करना चाहिए और उन्हें एक समुदाय मात्र के नेता के रूप में नहीं बल्कि अग्रणी राष्ट्र–निर्माता और उत्कृष्ट बुद्धिजीवी के रूप में भी देखना चाहिए। बाबासाहेब ने कहा था, "आज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता सर्वसाधारण में साझा राष्ट्रीयता की भावना सृजित करना है, यह भावना नहीं कि वे पहले भारतीय हैं और बाद में हिन्दू–मुसलमान अथवा सिंधी हैं, परंतु यह कि पहले और अंततः भारतीय ही हैं।" उनको सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि हम सभी अपनी जाति, धर्म, क्षेत्र, और पंथ से ऊपर उठकर 'भारतीय' बनें।
बाबासाहेब मां भारती के सच्चे सपूत और राष्ट्र–गौरव हैं। हम सभी धन्य हैं कि मां भारती ने हमें अपनी कोख में जन्म दिया लेकिन मां भारती धन्य हैं कि बाबासाहेब जी जैसे व्यक्ति ने उनकी कोख से जन्म लिया। आइए, आज 135 साल बाद हम उन्हें वह स्थान दें जिसके हकदार हैं और जिसे ब्रिटिश भारत और नव–स्वतंत्र भारत ने नहीं दिया सर्वप्रथम और अंत तक भारतीय, राष्ट्र प्रथम और राष्ट्र सर्वोपरि की भावना के अग्रदूत और हमारे लिए वंदनीय बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर।

श्रद्धेय अटलजी जन्मशताब्दी पर विशेष

मेरे अटल जी

नरेन्द्र मोदी

अटल जी अब नहीं रहे। मन नहीं मानता। अटल जी, मेरी आंखों के सामने हैं, स्थिर हैं। जो हाथ मेरी पीठ पर धौल जमाते थे, जो स्नेह से, मुस्कराते हुए मुझे अंकवार में भर लेते थे, वे स्थिर हैं। अटल जी की ये स्थिरता मुझे झकझोर रही है, अस्थिर कर रही है। एक जलन सी है आंखों में, कुछ कहना है, बहुत कुछ कहना है लेकिन कह नहीं पा रहा। मैं खुद को बार–बार यकीन दिला रहा हूं कि अटल जी अब नहीं हैं, लेकिन ये विचार आते ही खुद को इस विचार से दूर कर रहा हूं। क्या अटल जी वाकई नहीं हैं? नहीं। मैं उनकी आवाज अपने भीतर गूंजते हुए महसूस कर रहा हूं, कैसे कह दूं, कैसे मान लूं, वे अब नहीं हैं।

वे पंचतत्व हैं। वे आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सबमें व्याप्त हैं, वे अटल हैं, वे अब भी हैं। जब उनसे पहली बार मिला था, उसकी स्मृति ऐसी है जैसे कल की ही बात हो। इतने बड़े नेता, इतने बड़े विद्वान। लगता था जैसे शीशे के उस पार की दुनिया से निकलकर कोई सामने आ गया है।

जिसका इतना नाम सुना था, जिसको इतना पढ़ा था, जिससे बिना मिले, इतना कुछ सीखा था, वो मेरे सामने थे। जब पहली बार उनके मुंह से मेरा नाम निकला तो लगा, पाने के लिए बस इतना ही बहुत है। बहुत दिनों तक मेरा नाम लेती हुई उनकी वह आवाज मेरे कानों से टकराती रही। मैं कैसे मान लूं कि वह आवाज अब चली गई है। कभी सोचा नहीं था, कि अटल जी के बारे में ऐसा लिखने के लिए कलम उठानी पड़ेगी। देश और दुनिया अटल जी को एक स्टेट्समैन, धारा प्रवाह वक्ता, संवेदनशील कवि, विचारवान लेखक, धारदार पत्रकार और विजनरी जननेता के तौर पर जानती है, लेकिन मेरे लिए उनका स्थान इससे भी ऊपर का था। सिर्फ इसलिए नहीं कि मुझे उनके साथ बरसों तक काम करने का अवसर मिला, बल्कि मेरे जीवन, मेरी सोच, मेरे आदर्शों मूल्यों पर जो छाप उन्होंने छोड़ी, जो विश्वास उन्होंने मुझ पर किया, उसने मुझे गढ़ा है, हर स्थिति में अटल रहना सिखाया है।

हमारे देश में अनेक ऋषि, मुनि, संत आत्माओं ने जन्म लिया है। देश की आजादी से लेकर आज तक की विकास यात्रा के लिए भी असंख्य लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की रक्षा और 21वीं सदी के सशक्त, सुरक्षित भारत के लिए अटल जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व है।

उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था बाकी सब का कोई महत्त्व नहीं। इंडिया फर्स्ट –भारत प्रथम, ये मंत्र वाक्य उनका जीवन ध्येय था। पोखरण देश के लिए जरूरी था तो चिंता नहीं की प्रतिबंधों और आलोचनाओं की, क्योंकि देश प्रथम था। सुपर कंप्यूटर नहीं मिले, क्रायोजेनिक इंजन नहीं मिले तो परवाह नहीं, हम खुद बनाएंगे, हम खुद अपने दम पर अपनी प्रतिभा और वैज्ञानिक कुशलता के बल पर असंभव दिखने वाले कार्य संभव कर दिखाएंगे और ऐसा किया भी। दुनिया को चकित किया। सिर्फ एक ताकत उनके भीतर काम करती थी– देश प्रथम की जिद।

काल के कपाल पर लिखने और मिटाने ताकत, हिम्मत और चुनौतियों के बादलों की में विजय का सूरज उगाने का चमत्कार उनके सीने में था, तो इसलिए क्योंकि वह सीना देश प्रथम के लिए धड़कता था। इसलिए हार और जीत उनके मन पर असर नहीं करती थी। सरकार बनी तो भी, सरकार एक वोट से गिरा दी गयी तो भी, उनके स्वरों में पराजय को भी विजय के ऐसे गगनभेदी विश्वास में बदलने की ताकत थी कि जीतने वाला ही हार मान बैठे।

स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की रक्षा और 21वीं सदी के सशक्त, सुरक्षित भारत के लिए अटल जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व है।

अटल जी कभी लीक पर नहीं चले। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में नए रास्ते बनाए और तय किए। 'आंधियों में भी दीये जलाने' की क्षमता उनमें थी। पूरी बेबाकी से वे जो कुछ भी बोलते थे, सीधा जनमानस के हृदय में उतर जाता था। अपनी बात को कैसे रखना है, कितना कहना है और कितना अनकहा छोड़ देना है, इसमें उन्हें महारत हासिल थी।

राष्ट्र की जो उन्होंने सेवा की, विश्व में मां भारती के मान–सम्मान को उन्होंने जो बुलंदी दी, इसके लिए उन्हें अनेक सम्मान भी मिले। देशवासियों ने उन्हें 'भारत रत्न' देकर अपना मान भी बढ़ाया। लेकिन वे किसी भी विशेषण, किसी भी सम्मान से ऊपर थे।

जीवन कैसे जीया जाए, राष्ट्र के काम कैसे आया जाए, यह उन्होंने अपने जीवन से दूसरों को सिखाया। वे कहते थे, "हम केवल अपने लिए ना जीएं, औरों के लिए भी जीएं... हम राष्ट्र के लिए अधिकाधिक त्याग करें। अगर भारत की दशा

दयनीय है तो दुनिया में हमारा सम्मान नहीं हो सकता, किंतु यदि हम सभी दृष्टियों से सुसंपन्न हैं तो दुनिया हमारा सम्मान करेगी"।

देश के गरीब, वंचित, शोषित के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए वे जीवन भर प्रयास करते रहे। वे कहते थे "गरीबी, दरिद्रता गरिमा का विषय नहीं है, बल्कि यह विवशता है, मजबूरी है और विवशता का नाम संतोष नहीं हो सकता।" करोड़ों देशवासियों को इस विवशता से बाहर निकालने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किए। गरीब को अधिकार दिलाने के लिए देश में आधार जैसी व्यवस्था, प्रक्रियाओं का ज्यादा से ज्यादा सरलीकरण, हर गांव तक सड़क, स्वर्णिम चतुर्भुज, देश में विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर, राष्ट्र निर्माण के उनके संकल्पों से जुड़ा था।

आज भारत जिस टेक्नोलॉजी के शिखर पर खड़ा है उसकी आधारशिला अटल जी ने ही रखी थी। वे अपने समय से बहुत दूर तक देख सकते थे स्वप्नद्रष्टा थे लेकिन कर्मवीर भी थे। कवि हृदय, भावुक मन के थे तो पराक्रमी सैनिक मन वाले भी थे। उन्होंने विदेश की यात्राएं कीं। जहां–जहां भी गए, स्थायी मित्र बनाये और भारत के हितों की स्थायी आधारशिला रखते गए। वे भारत की विजय और विकास के स्वर थे।

देश के गरीब, वंचित, शोषित के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए अटल जी जीवन भर प्रयास करते रहे। वे कहते थे 'गरीबी, दरिद्रता गरिमा का विषय नहीं है, बल्कि यह विवशता है, मजबूरी है और विवशता का नाम संतोष नहीं हो सकता।'

अटल जी का प्रखर राष्ट्रवाद और राष्ट्र के लिए समर्पण करोड़ों देशवासियों को हमेशा से प्रेरित करता रहा है। राष्ट्रवाद उनके लिए सिर्फ एक नारा नहीं था, बल्कि जीवन शैली थी। वे देश को सिर्फ एक भूखंड, जमीन का टुकड़ा भर नहीं मानते थे, बल्कि एक जीवंत, संवेदनशील इकाई के रूप में देखते थे। "भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।" यह सिर्फ भाव नहीं, बल्कि उनका संकल्प था, जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया। दशकों का सार्वजनिक जीवन उन्होंने अपनी इसी सोच को जीने में, धरातल पर उतारने में लगा दिया। आपातकाल ने हमारे लोकतंत्र पर जो दाग लगाया था उसको मिटाने के लिए अटल जी के प्रयास को देश हमेशा याद रखेगा।

राष्ट्रभक्ति की भावना, जनसेवा की प्रेरणा उनके नाम के ही अनुकूल अटल रही। भारत उनके मन में रहा, भारतीयता तन में। उन्होंने देश की जनता को ही अपना आराध्य माना। भारत के कण–कण, कंकर–कंकर, भारत की बूंद–बूंद को, पवित्र और पूजनीय माना।

जितना सम्मान, जितनी ऊंचाई अटल जी को मिली उतना ही अधिक वह जमीन से जुड़ते गए। अपनी सफलता को कभी भी उन्होंने अपने मस्तिष्क पर प्रभावी नहीं होने हूं। दिया। प्रभु से यश, कीर्ति की कामना अनेक व्यक्ति करते हैं, लेकिन ये अटल जी ही थे जिन्होंने कहा, "हे प्रभु! मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना। गैरों को गले ना लगा सकें, इतनी रुखाई कभी मत देना" ।

अपने देशवासियों से इतनी सहजता और सरलता से जुड़े रहने की यह कामना ही उनको सामाजिक जीवन के एक अलग पायदान पर खड़ा करती है।

वे पीड़ा सहते थे, वेदना को चुपचाप अपने भीतर समाये रहते थे, पर सबको अमृत देते रहे– जीवन भर। जब उन्हें कष्ट हुआ तो कहने लगे– "देह धरण को दंड है, सब काहू को होये, ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूरख भुगते रोए।" उन्होंने ज्ञान मार्ग से अत्यंत गहरी वेदनाएं भी सहन कीं और वीतरागी भाव से विदा ले गए। यदि भारत उनके रोम–रोम में था तो विश्व की वेदना उनके मर्म को भेदती थी। इसी वजह से हिरोशिमा जैसी कविताओं का जन्म हुआ। वे विश्व नायक थे। 'मां भारती' के सच्चे वैश्विक नायक। भारत की सीमाओं के परे भारत की कीर्ति और करुणा का संदेश स्थापित करने वाले आधुनिक बुद्ध।

कुछ वर्ष पहले लोकसभा में जब उन्हें वर्ष के सर्वश्रेष्ठ सांसद के सम्मान से सम्मानित किया गया था तब उन्होंने कहा था, "यह देश बड़ा अद्भुत है, अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा रहा है, अभिनंदन किया जा सकता है।"

अपने पुरुषार्थ को, अपनी कर्तव्यनिष्ठा को राष्ट्र के लिए समर्पित करना उनके व्यक्तित्व की महानता को प्रतिबिंबित करता है। यही सवा सौ करोड़ देशवासियों के लिए उनका सबसे बड़ा और प्रखर संदेश है। देश के साधनों, संसाधनों पर पूरा भरोसा करते हुए, हमें अब अटल जी के सपनों को पूरा करना है, उनके सपनों का भारत बनाना है।

नए भारत का यही संकल्प, यही भाव लिए मैं अपनी तरफ से और सवा सौ करोड़ देशवासियों की तरफ से अटल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, उन्हें नमन करता हूं।

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री है)

पाक का आतंकवादी चेहरा बेनकाब : योगी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविंद सिंह जैसे वीर योद्धाओं को नमन किया। साथ ही पाकिस्तान को आतंकवाद पर घेरते हुए कहा कि उसने इतनी बड़ी हिमाकत कर दी है कि अब वह अपने वजूद के लिए संघर्ष करता दिखाई देगा। पाकिस्तान का आतंकवादी चेहरा अब दुनिया के सामने बेनकाब हो चुका है।

उन्होंने 22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा भारतीय पर्यटकों के साथ की गई बर्बरता का जिक्र करते हुए कहा कि इस घटना के बाद हर भारतवासी ने पाकिस्तान को सबक सिखाने की ठान ली थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारी तीनों सेनाओं ने पाकिस्तान को करारा जवाब दिया है। आज पाकिस्तान दुनिया में अलग–थलग पड़ चुका है और कराहता हुआ नजर आ रहा है।

योगी ने पाकिस्तान के बेशर्मी पूर्ण रवैये पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि भारत की कार्रवाई में मारे गए आतंकवादियों के जनाजे में पाकिस्तान के शीर्ष सैन्य अधिकारियों और राजनीतिज्ञों की मौजूदगी दुनिया की आंखें खोलने वाली है। यह साबित करता है कि पाकिस्तान न केवल आतंकवादियों को संरक्षण देता है, बल्कि सीधे तौर पर आतंकवाद में शामिल भी है। अब पाकिस्तान अपने वजूद के लिए जूझ रहा है।

भारत की कार्रवाई में मारे गए आतंकवादियों के जनाजे में पाकिस्तान के शीर्ष सैन्य अधिकारियों और राजनीतिज्ञों की मौजूदगी दुनिया की आंखें खोलने वाली है।

उन्होंने देशवासियों से अपील की कि वे भारतीय सेनाओं का मनोबल बढ़ाएं और सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहों से सावधान रहें। उन्होंने कहा कि हर भारतवासी की जिम्मेदारी है कि हम अपनी सेनाओं के साथ खड़े हों और शरारतपूर्ण कार्रवाइयों को बेनकाब करें। केंद्रीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में हमें एकजुट होकर कार्य करना है। सीएम योगी ने जोर देकर कहा कि भारत हर हाल में विजयी है और रहेगा। मुख्यमंत्री ने पूरे उत्तर प्रदेश की ओर से भारतीय सेनाओं के साथ मजबूती से खड़े होने का संकल्प दोहराया।

मुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप की वीरता को याद करते हुए कहा कि उनकी जयंती आज के चुनौतीपूर्ण समय में नई प्रेरणा देती है। उन्होंने हल्दीघाटी की ऐतिहासिक लड़ाई का उल्लेख किया, जहां महाराणा ने वनवासियों और गिरिवासियों की सेना के साथ अकबर की विशाल सेना को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था। कार्यक्रम में विधान परिषद सदस्य राकेश सिंह और मानवेंद्र सिंह को चौराहे के सुंदरीकरण के लिए बधाई दी गई। उन्होंने कहा कि ये चौराहा महाराणा प्रताप सिंह चौराहे के नाम से जाना जाएगा।

हर भारतवासी की जिम्मेदारी है कि हम अपनी सेनाओं के साथ खड़े हों और शरारतपूर्ण कार्रवाइयों को बेनकाब करें।

विकसित भारत हमारा संकल्प : धर्मपाल

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने गोरखपुर क्षेत्रीय कार्यालय पर क्षेत्र के सभी नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों, क्षेत्र के जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी तथा मंडल चुनाव प्रवासियों की बैठक में भी संवाद किया। श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि मंडल अध्यक्ष संगठन की सबसे महत्वपूर्ण ईकाई है और चुनाव से लेकर संगठनात्मक गतिविधियों का मुख्य आधार है। भाजपा कार्यकर्ताओं के परिश्रम, अनुशासन एवं समर्पण से आज भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनैतिक दल है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बदलते भारत की सामरिक शक्ति आज पूरा विश्व देख रहा है और आर्थिक रूप से मजबूत होता भारत विश्व को दिशा देने के लिए तैयार है।

श्री सिंह ने कहा कि मंडल अध्यक्षों का दायित्व है कि वह संगठनात्मक कार्यो की दृष्टि से आदर्श मंडल का गठन करें। मंडल गठन में 61 सदस्यों की कार्यसमिति का गठन किया जाएगा। जिसमें मंडल के 15 पदाधिकारी होगें, जबकि बाकी मंडल कार्यसमिति के सदस्य होगें। उन्होंने कहा कि सबका साथ, सबका विकास के संकल्प के साथ मंडल कार्यसमिति गठन में अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग व महिला समेत सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए। सामाजिक समीकरणों के साथ प्रत्येक शक्तिकेन्द्र से मंडल कार्यसमिति में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए। प्रत्येक माह मंडल कार्यसमिति की बैठक हो तथा मंडल अध्यक्ष अपने प्रवास तथा कार्यों की डायरी मेंटेन करने की आदत बनाए।

संगठन के सभी अभियानों एवं कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से संचालित करें। उन्होंने कहा कि बूथ स्तर पर कार्ययोजना तैयार करके सतत संपर्क व सतत संवाद के माध्यम से विपक्ष द्वारा लगातार फैलाए जा रहे झूठ और भ्रम का पर्दाफाश करने का काम करना है। उन्होने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में देश तेजी से विश्व की तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर बढ़ रहा है। देश की सामरिक शक्ति पूरा विश्व देख रहा है। देश के प्रत्येक नागरिक की आत्मनिर्भरता के साथ विकसित भारत के संकल्प से सभी देशवासियों को जोड़ने का काम करना है।

श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि विकसित भारत के साथ भारत के विश्वगुरू बनने और अपने पुरातन गौरव को पुनः प्राप्त करने तक हम सभी को परिश्रम और समर्पण भाव से काम करना है। हमारा ध्येय वैभवशाली राष्ट्र निर्माण का है। इसलिए भाजपा की केन्द्र व प्रदेश की सरकारों की सभी योजनाएं गरीब, वंचित, शोषित, पीड़ित वर्ग के आर्थिक व सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित है। किसी भी योजना में ना भेदभाव है और ना पक्षपात है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब के सपनों के भारत और बाबा साहेब के संविधान के अनुरूप सामाजिक न्याय की व्यवस्था के लिए भाजपा की सरकार जरूरी है। भाजपा सरकार के लिए प्रभावी मंडल, मजबूत शक्ति केन्द्र और अभेद्य बूथ व्यूह रचना जरूरी है। आप सभी को मंडल कार्यसमितियों के गठन के लिए निष्ठावान कार्यकर्ताओं का चयन करना है।

मुख्य अतिथि
माननीय सुनील बंसल जी
राष्ट्रीय महामंत्री, भाजपा
अध्यक्षता
विशिष्ट अतिथि
पद्मभूषण

भारत शौर्य
तिरंगा यात्रा

जनजागरण
अल्पसंख्यक प्रबुद्ध संवाद

भारतीय जनता पार्टी, गोरखपुर क्षेत्र
BJP

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोड: UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
मई प्रथम अंक 2025 –प्रेषित डाकघर –R.M.S. चारबाग, लखनऊ –प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।